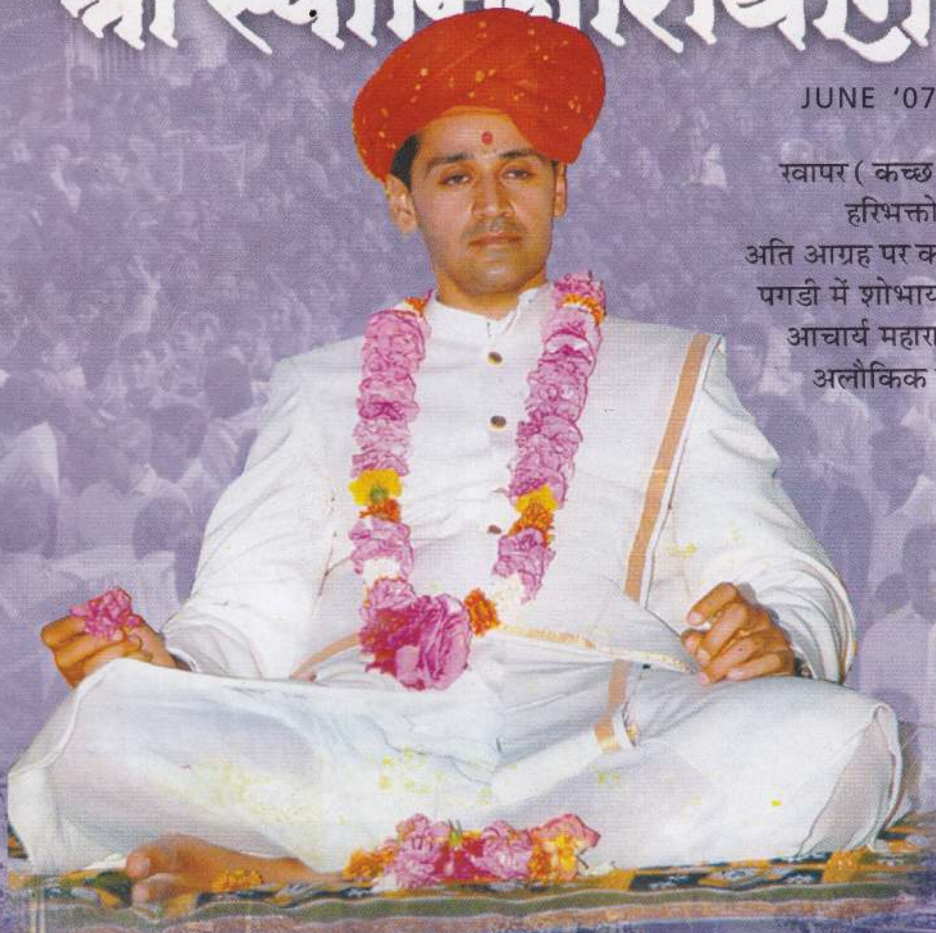
SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

Rs. 5/-

JUNE '07

स्वापर (कच्छ) के प्रेमी
हरिभक्तो के
अति आग्रह पर कच्छी रज़वाडी
पगडी में शोभायात्रा में प.पू.
आचार्य महाराजश्री का
अलौकिक दर्शन ।



પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



रवापर (कच्छ) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



वेगडवाव (मूलीदेश) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



ापर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर मुख्य मंच पर मंगलदीप प्रगट करते हुए ज के महंत स्वामी पी.पी. स्वामी, एवं वयोवृद्ध संत तथा हरिभक्त ।



वेगडवाव (मूलीदेश) भाईयों के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



रवापर में यज्ञ विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं विद्वान पंडितो के साथ संत हरिभक्त लाभ ले रहे है ।



नारायणघाट मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ उपस्थिति में अधिकमास के निमित्त रात्रि पारायण करते हुए शा.स्वा. रामकृष्णदासजी एवं कथा श्रवण करते हुए हरिभक्त ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ जुन -२००७

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रूपरेखा	३
३.	"आनंद की वर्षा" : भाभीने पकड लिया	४
४.	सत्य समझ	५
५.	श्री मूलीपुर में महाराज	६
६.	प.पू.बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीकी अमेरिका यात्रा	७
८.	श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र "श्री स्वामिनारायण" मासिक की जानकारी अपने हित में	९
९.	जागृतता से एकता की तरफ	१०
१०.	सत्संग सुरभि : महाराज आपको बुला रहे हैं	१२
११.	सत्संग बालवाटिका (१) भगवान भक्तका ध्यान रखते है (२) अजब रक्षा अलबेले की	१३
१२.	भक्तिसुधा (१) सद्‌गुण की सागर प.पू.अ.सौ. प्रगटलक्ष्मी स्वरुपा दोनो गादीवाला (२) तीर्थ मूर्तिमान हैं (३) भगवानका निश्चय भगवान से ही होता है (४) धर्मकुल की दयालुता	१५
१३.	प्रश्नपेटी	१८
१४.	समाचार वृत्तांत	१९

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

हरिदीप

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

भगवान के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान अर्थात् अपने इष्टदेव की उपासना । भगवान के स्वरुप का जब तक ज्ञान नहीं होगा तब तक उस जीव का मोक्ष होना सम्भव नहीं है । धर्म-ज्ञान वैराग्य - भक्ति का उपदेश प्राप्त करके उसी स्वरुप का ज्ञान प्राप्त करना है । ऐसे शुद्ध ज्ञान के विना मोक्ष की प्राप्ति सम्भव नहीं है । यह वेद वाक्य है । "ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः" अर्थात् ज्ञान आजकल की तरह शाब्दिक ज्ञान नहीं जो दूसरो को अपने शब्दजाल से भ्रमित करने वाला हो, वह मात्र बन्धन ही देता है । मनः कल्पित शब्दार्थ करके जैसे-तैसे उसका भाव निकालकर जगत के भोले-भाले लोगों को भ्रमित करके मोक्ष मार्ग से वंचित कर देते हैं । इसलिये ऐसे भ्रम उत्पन्न करने वाले साहित्य तथा रंगीन आधुनिक साहित्य वांचन करने वाले सावधानी से स्वयं भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रमाणित अपने शास्त्र एवं नन्द संतो द्वारा रचित शास्त्र ही मोक्ष देने वाले हैं ऐसा समझना होगा । जगत में केवल भ्रम उत्पन्न करने वाले साहित्य हैं या ज्ञान देनेवाले ज्ञान दाता भी भ्रम ही उत्पन्न करते हैं, भ्रम छेत्ता तो कोई है ही नहीं । इसलिये सावधान होकर भक्तजन अपनी आत्यंतिक मोक्षमार्ग बिगड न जाय यह ध्यान रखना अपना कर्तव्य है । अपने इष्ट देव किस प्रकार प्रसन्न हो इसके लिए सतत श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक एकनिष्ठा भाव से लगे रहना चाहिए ।

अन्यथा जगत में इस जीवात्मा को गलत मार्ग पर चढा देने वालों की कतार लगी है । कहीं शिक्षण के नाम पर तो कही धर्माचरण के नाम पर, तो कहीं ज्ञान-वैराग्य भक्ति के नाम पर । जिसे जितना सुंदर शब्द प्रयोग करने आवे वहीं सबसे बडा पंडित है, ज्ञानी है, संत है । सभी का मात्र धन एकत्रित करने की मोनो पोलिसी है । सुंदर एक ट्रस्ट खड़ा करके अपने इरादों को पूर्ण कर लेते हैं । नाम कमाने के लिये यश प्राप्त करने के लिए सुन्दर लेख लिखवाकर - छपवाकर मात्र पैसा इकठ्ठा करना है । इसमें मोक्ष कल्याण कहां दिखाई दे रहा है । ऐसे सुनियोजित तत्वों से मात्र भगवान ही रक्षा कर सकते है अन्य नहीं । इसलिये निर्भय होकर परमात्मा की शरण स्वीकार करके भक्ति द्वारा मनुष्य देह को सार्थक बनाना चाहिए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई-२००७

१. बावोल (जि. गांधीनगर) गाँव में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
श्री रसिकभाई रावजीभाई काछडिया के यहाँ पदार्पण बापुनगर ।
श्री धर्मेशभाई श्यामजीभाई के यहाँ पदार्पण बापूनगर ।

२. श्री प्रविणभाई पी. पटेल के यहा पदार्पण घाटलोडिया ।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

६. श्री मिनेषभाई पी. पटेल के यहाँ पदार्पण घाटलोडिया ।

८. से १०. श्री घनश्यामनगर (मूलीदेश हलवद) श्री हनुमानजी मंदिर में रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण एवं वहीं से भुज (कच्छ) पदार्पण ।

१२. भादरा (हालार मूलीदेश) श्री स्वामिनरायण मंदिर, मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्रीहरि एन्टरप्राईझ में पदार्पण, बापुनगर ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर, बोपल कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर बेगडवाव (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण .
श्री डॉ. गौरांगभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, बोपल ।
श्री गोविंदभाई बारसिया के यहाँ पदार्पण, बोपल ।
श्री खुशालभाई सोमाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, बोपल ।
श्री नरेशभाई नटवरलाल भावसार के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, घाटलोडीया ।

१६. झूलासण श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण एवं महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम गुरुकुल ध्रांगध्रा युवा शिबिर प्रसंग पर पदार्पण ।

१९. प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा बड़ी गादीवालाश्री के मुख्य यजमानपद पर अधिक ज्येष्ठ शुक्ल-३ तृतीया के दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक वेद विधिसे अपने हाथों से सम्पन्न किये ।
श्री स्वमिनारायण मंदिर महादेवनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२० - २१. भुज (कच्छ) श्री स्वामिनारयण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

"आनंद की वर्षा"

- शास्त्री स्वामी हरिजीवनदास (महुधा वाले)

(सत्संग साहित्य प्रेमी हरिभक्तों को सूचित किया जाता हैं कि प.पू.ध.धु. आचार्य कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से आनंदकी वर्षा नामका नया लेख शुरुहो रहा है। जिसमें श्रीहरि की सखाभावना तथा आनंद विनोद के चरित्र का समावेश होता है।)

जगत में दो चीजे ऐसी है जो बांटने से बढती है। वो क्या है जानते हो ? एक "आनंद" और दूसरा "ज्ञान"

रमणीय तथा दिव्य भूमि छपैया का स्मरण करते ही हृदय में आनंद से भर जाता है । छपैया अर्थात् साक्षात् अक्षरधाम। रमणीय वृक्ष तथा तन, मधुर जल से लहराते तालाब तथा हरिगुन गाते वही से शोभा में अभिवृद्धि होती है। मुक्तात्मा तथा देव सदैव दिव्य स्म से आते जाते है। ऋषि तथा तपस्वियों के पसंदगी वातावरण जहाँ अलौकिक तथा सुंदर वातावरण रहता है तथा आनंद की वर्षा होती है। उस पवित्र भारत भूमि के छपैया में धर्म भक्ति के घर साक्षात् आनंदकंद रसेश्वर माधुर्य मूर्ति घनश्याम बिराजते है। छपैयावासी हंमेशा आनंद में रहते है। छपैया के नारायण सरोवर के किनारे धर्मदेव अपनी गाये बांधते । मंगल नामका, ग्वाला गायो की देखरेख रखता था और रोज गायो को दुह कर दूध धर्मदेव के घर पहुंचा देता । यूं तो मंगल के काम में कोई नुस्क नही था। किंतु भक्ति माता को लगा मंगल दूध में मिलावट करता है। सुहासीनी भाभी को भी यही शंका हुई।

तो अब क्या करना ? अंत में उसपर नजर रखने का काम घनश्याम को सौंपा । सरोवर के दक्षिण कोने पर गौशाला थी। सुबह-शाम घनश्याम की उपस्थिति में गाये दुही जाने लगी। और दूध के पात्र भरे जाने लगे दुहने के पश्चात् सारा दूध बडे पात्र में लेकर ग्वाले से उठवा कर घनश्याम घर आते।

घनश्याम को दूध की जिमेदारी मिली इसलिये उन्हें आनंद आ गया । अच्छा स्थान मिले तो काम कर लेना चाहिए। तथा होद्दे का सद्उपयोग भी करना चाहिए ।इसलिए घनश्याम महाराजने अपने बाल सखाओं को कहा "मित्रो ! आप अपने बरतन लेकर आना। फिर क्या था दूसरे दिन से नारायण सरोवर के किनारे बच्चो की लाईन लगती। सभी बाल सखा खूब आनंदपूर्वक दूध पीते थे । घनश्याम बुद्धिमान थे दूध के पात्र खाली रहने नहीं देते थे।

तथा दूध के बारे में ग्वाले पर शंका का कोई स्थान नहीं था। फिर भी दूध तो वैसा पतला ही रहा। भाभी दूध में से दही बनाती तो वह भी बढिया नही बनती । भाभी ने यह बात माताजी को सुनाई। माताजीने कहा ऐसा भी हो सकता है कि ग्वाला घनश्याम की नजर हटते ही मिलावट करता हो ? ना माताजी घनश्याम तो बहुत ही बुद्धिमान है।

बात चल रही थी तभी घनश्याम के

भाभीने पकड लिया



मित्र वहाँ से गुजरे। भाभी ने उन्हे रोका और पूछा बेटा। ये कटोरे लेकर तालाब पर गये थे ? हा माताजी घनश्यामने कहा था जिसे घर दूध नहीं मिलता उसे कटोरे लेकर दूध पीने बुलाया था। इसलिए वह किसी का दुःख नहीं देख सकते इसलिए बच्चो को दूध पीला देते है। फिर भी दूध कम नहीं होता इसमेंकुछ रहस्य है भाभी ने फिर बच्चो से पूछा घनश्याम क्या चमत्कार करते है कि दूध कम नहीं होता ? तब बच्चे बोले अरे ! कहाँ से कम होंगे ? हम दूध पीकर कटोरे साफ कर उसमें नारायण सरोवर का पानी भर लाते है और घनश्याम उसे दूध में मिला देता है फिर बताइये ये दूध कहाँ से कम होगा ? घनश्यामकी क्या लीला है।

तभी घनश्याम ग्वाले के साथ घर पहुंचे ! प्रभु को देखकर माताजी तथा भाभी हंसने लगीं भागीं ने आते ही पूछा अभी दूध पतला क्यो आता है ? प्रभुने निर्दोषस्म से उत्तर दिया कि ताजी बिआई हुई गाय का दूध पतला ही होता है। उत्तर सुनकर सब लोग हंसने लगे।

सत्य समझ

- श्री घनश्यामभाई शकराभाई पटेल
(नारणपुरा)

आज के कलयुग में सच्चे संत और महापुरुष को पहचानना बहुत कठिन होता है । आज के जमाने में जो मनुष्य बहुत बोलने वाला हो और अपनी वाणी से सामनेवाले को परास्त करने की कला जानता हो तो वह पूज्य होने लगता है और समाज में उसकी बोलबाला हो जाती है । आजकल भिन्न भिन्न धर्मो में जिस व्यक्ति की पूजा चल रही है वह देखकर ऐसा लगता है कि मनुष्य की बौद्धिक शक्ति का अंत आ चुका है । अपनी वाणी से प्रभावित होकर खुद का महत्व बढे उसमें सबको रस है । कोई भी महान पुरुष हो परंतु उसकी सच्ची कसौटी तो तब होती है जब स्त्री धन के संपर्क में आता है । परिस्थिति में जो अस्थिर न होजाये वही यथार्थ होता है । तत्वज्ञान और आध्यात्मिकज्ञान की सौगंध लेकर समग्र दुनिया की प्रजा को मूर्ख बनाकर स्वयं को भगवान के रुप में उच्च बनाना हो तो उसके लिए इस युग में यह कार्य सरलता से हो सकता है । मनुष्य कभी अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करता है और दूसरे के कहने का अनुसरण करता है तथा भेड़ बकरियों की तरह जैसे एक भेड गड्ढे में गिरती है । उसी प्रकार उसका अनुसरण करती हुए बाकी सब भेड़ उसी गड्ढे में गीर जाती है । जब यह ज्ञान उनमें आता है तब बहुत ही विलंब हो चुका होता है ।

जो समय सचकता तथा आत्मचिंतन रखते हों तो हमें कोई मूर्ख नही बना सकता । इतनी समझ तो होनी ही चाहिए कि एक सामान्य मनुष्य भगवान नही हो सकता । भगवान के लक्षण पहचानना चाहिए । सच्चा उपदेश तथा अपने अनुयायियों की आवन-जावन रखकर और अपने आपको पूज्य बताकर खुद की मूर्ति मंदिर में स्थापित करके अपनी पूजा करवाना ये तो हद हो जाती है । और इसको मानने वाले भी कितने मूर्ख होने है ।

जमीन और जोरु यह तीन में से जो परे हो तथा नखशिख पवित्र हो तो उसको महान मनुष्य कहा गया है । बाकी अपने आपको पवित्र और पूज्यनीय समझने वाले व्यक्ति की बेव साईट की जांच की जाये तो यथा क्या है वह पता चल जाता है, तथा अंधाअनुकरण करके संप्रदाय में पडे रहने से अच्छा है धर्म का पालन करना । भगवान के रुप में पूज्यनीय बनने का सपना रखता है तो तत्काल उसे लाभ होता है परंतु कुछ ही वर्षो बाद उसके धन का नाश हो जाता है । क्योंकि उसका आचरण ही गलत होता है । ऐसा कब तक टिक सकता है । संत तो उसे कहते है जिसका आचरण शुद्ध होता है और कभीभी समाज को गलत राह पर नही चलने का आदेश देना चाहिए । ऐसे संत भी अगर स्वंय को भगवान के समान समझने लगे तो वह भी गलत है उसका विरोध करना चाहिए । किसी भी धर्म को मानते हो और उस धर्म में व्यक्ति पूजा होती हो तो उसका तत्काल त्याग करना चाहिए । क्योंकि मनुष्य-व्यक्ति भगवान हो ही नहीं सकता । और वह समाज को बचाने का काम करता है । इससे ज्यादा कुछ भी करने की क्षमता उनमें नहीं होती है । इसलिए आज के समय में ऐसे व्यक्ति पूजानेवाले संप्रदाय से दूर रहने में ही भला समझते हैं ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम का थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

श्री मूलीपुर में महाराज

- पटेल अमृतलाल हीरजीभाई (लखतर)

एक समय श्रीजी महाराज हलवद से मूलीपुर में पधारे। धोली खडका के पास मंदिर का खेत है। उसी में एक नीमका वृक्ष है जिसके नीचे करीम भक्त ने साफ करके आसन विछाया। मूलजी ब्रह्मचारी एवं श्रीहरि उसी नीम वृक्ष के नीचे आकर बैठे। वहीं पर भगवान सतवार पुरवट हांक रहा था। उसी समय सतवार गौर विप्र कुबेरजी तथा दयाराम दोनो भाई स्नान के लिये आये। वे दोनो महाराज का दर्शन करके पास में बैठकर उन्हें देखते ही रहे। यह देखकर मूलजी ब्रह्मचारी से पूछे कि ये कौन हैं। ये तो स्वामिनारायण भगवान है। यह सुनते ही उन दोनो ने कहा हम रसोई की सामान लायें, बाद में दोनो भाई कच्चा सिद्धा ले आये, ब्रह्मचारीजीने रसोई तैयार किया, महाराज के जिमने के बाद सभी भोजन किये दोनो ब्राह्मण भी भोजन करके महाराज के पास बैठे।

वे दोनो श्रीजी महाराज के शरीर में दिव्य तेज देखे। अक्षरधाम का दर्शन किया, मुक्तो को देखा। वे दोनो भगवान से पूछे ये लोग कौन है। श्रीजी महाराज ने कहा ये सभी मुक्त लोग है। इस प्रकार बात करते करते सायंकाल हो गया, तब ब्राह्मणो ने कहा महाराज आज हमारे गाँव में निवास कीजिये। महाराज ने कहा महाराज निवास कहाँ होगा। ब्राह्मणने कहा सामने के बगीचे में एक बंगला है, वह एकांत स्थान है। वहाँ आप पधारिये। महाराज वहाँ रात्रि निवास किये। दरबार में से सभी व्यवस्था की गयी। दरबार से सूचना आयी कि महाराज प्रातः जायेंगे नहीं दरबार में भोजन का प्रसाद लेने के बाद ही जायेंगे। ऐसा ही हुआ, महाराज रात्रि निवास करके दूसरे दिन तालाब में स्नान करके ध्यान मुद्रा में तालाब के किनारे बैठे थे, उसी समय मूलजी शेठ स्नान करने गये। महाराज ध्यान मग्न थे पैर-पर पैर चढाकर पद्मासन में बैठे थे मूलजी शेठ नजदीक जाकर देखा कि महाराज के चरण में सोलह चिह्न है पुनः देखा तो बत्तीस चिन्ह है, इसके बाद तो उन्हे चौरासी चिन्ह दिखाई दिये। अब उन्हे यह निश्चित होने लगा कि ये तो अवतार के अवतारी पुरुषोत्तम नारायण ही है। मूलजी ब्रह्मचारी से पूछा कि ये कौन है? ब्रह्मचारीने कहा ये स्वामिनारायण भगवान हैं। स्वामिनारायण भगवानने पूछा आप कहा रहते हैं। मैं यहीं बगल के लीमडी गांव में रहता हूँ। बाद में तो मूलजी शेठ महाराज का एक निष्ठ भक्त हो गये। महाराज को घर लाकर शुद्ध ब्राह्मण से रसोई तैयार कराकर महाराज को भोजन कराये। दोपहर मे आराम करके सायंकाल तैयार हुए उसी समय गाँव के दरबार वहाँ मिलने आये। दरबार रामाजीभाई ने प्रश्न किया, महाराज किस प्रकार आप प्रसन्न होते हैं। प्रभु ने कहा कि भगवान को वश में करना चाहे तो सम्भव नहीं है। प्रथम तो भगवान के अनुकुल हमें होना होगा बाद में सभी ईन्द्रियो एवं अंतःकरण को वश में करना होगा। में भगवान अपने भक्त के कल्याण हेतु गस्सा का भी त्याग कर देंगे। जैसे कोई नौकर राजा की आज्ञानुसार व्यवहार करता है तो राजा उसके अनुकूल हो जाता है। इसी प्रकार भक्त भगवान की इच्छा के अनुसार कोई व्यवहार करता है तो भगवान उसके वश में होजाते हैं। इस प्रकार का उदाहरण देकर सभी को प्रसन्न करके तालाब में स्नान करने चले गये। स्नान करके आये तो बगीचे में आकर बैठे, उस समय गाँव की महिलायें महाराज के दर्शनार्थ आयीं। आकर बतायी कि रात्रि का भोजन दरबार में से आयेगा भोजन लानेवाली दरबार की माताजी, दरबार की पत्नी स्याली बा, राजूबा की पुत्री केशाबा, एवं मोंघी। इत्यादि महिलायें दर्शन करने आयी। महाराज को भोजन कराया बाद में प्रार्थना किया कि हे महाराज आप यहाँ पर पन्द्रह महीने रहिये। महाराज ने हाँ कह दिया और कहा कि - बहुत खूब हम अवश्य रहेंगे। महाराज की सेवा में मूलजीभाई विप्र, कुबेरजी दयाराम, रामकृष्ण पुरुषोत्तम इत्यादि थे। तीसरे दिन बाईबा एवं राजूबाने रसोई तैयार करके भोजन के लिये बुलवाया। महाराज भोजन के लिए पधारे, भोजन के पश्चात महाराज को एवं मूलजी ब्रह्मचारी को मुखवास दिया। दरबार के एक वरामदे में बहुत सारे भूत रहते थे। महाराज को देखते ही जोर-जोर पैंरो के चलने की आवाज होने लगी, महाराज ने कहा यह कैसी आवाज? ब्रह्मचारी ने कहा महाराज ये सभी भूत है, इनका आप मोक्ष कर दीजिए। जिस में पच्चीस भूत थे सभी का मोक्ष महाराज ने कर दिया। वे मुक्त हो गये। महाराजने उन्हे अक्षरधाम में भेंज दिया। सभी को बडा आश्चर्य हुआ।

प.पू.बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीकी अमेरिका यात्रा

- प्रहलादभाई वी. पटेल (करजीसणवाला)

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री स्वामिनारयण भगवान के स्पर्श से पावन अमूल्य प्रसादी की वस्तुओं का दिव्य संग्रहस्थान "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के प्रचारार्थ प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत मंडल के साथ यू.एस.ए. की धरती पर अप्रैल २००७ से मई ९-२००७ तक अनेक हरिभक्तों के घर दर्शन एवं चरण स्पर्श तथा अमृतवाणी का अलभ्य लाभ दिये थे । २१ दिन की इस धर्म यात्रा में इन्डिया से उनके साथ सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत, नारायणपुरा मंदिर के महंत तथा हाथीजन गुरुकुल के संचालक, शिकागो मंदिर के महंत धर्मवल्लभदास तथा पुजारी स्वामी तथा श्री संदीपभाई चौकसी । यहाँ के हरिभक्तों में प्रहलादभाई, ठाकोरभाई, पंकजभाई, महेशभाई, कनुभाई, बोस्टन से चंद्रेशभाई, संजयभाई, शिकागो से जयंतीभाई डिट्रोईट से कांतिभाई तथा इन्डिया से विठ्ठलभाई, अरविंदभाई ठक्कर, कंटकी से सोमाभाई इत्यादि लोग यात्रा में थे ।

यात्रा के प्रारम्भ में केनेडी एरपोर्ट पर ता.२० अप्रैल २००७ शुक्रवार को पूज्य बडे महाराजश्री के शुभ आगमन पर न्यूजर्शी के महंत स्वामी माधवजीवनदास तथा संत-हरिभक्त पुष्पहार से स्वागत किये । दूसरे दिन प्रातः शनिवार को हिरभक्तों के साथ सेंटलुइस पधारे थे । वहाँ पर विनोदभाई, गजेन्द्रभाई, भरतभाई, रमेशभाई तथा अन्य भक्तों ने खूब सहकार दिया । अनेक भक्तों के घर पदार्पण किये । निवास श्री विनोदभाई के घर किये थे । दूसरे दिन वहाँ से कसास होकर नाथालाल पटेल के यहाँ भोजन करके हरिभक्तों को प्रसन्न करके जेफरसन सीटी कांतिभाई डांगरवा के यहाँ भोजन करके करजीसण के घनश्यामभाई के यहाँ रात्रि निवास किये । दोपहर का भोजन सायंकाल ४-०० बजे एवं अंतिम पदार्पण रात्रि २-०० बजे तथा सयन का समय ३ बजे मिला । फिर भी प्रसन्नता पूर्वक महाराजश्री हरिभक्तों से प्रेमपूर्वक खबर पूछ रहे थे । वहाँ से घनश्यामभाई की गाडी में तथा एकबडी गाडी में १७ भक्त संतो के स्टाफ के साथ पदार्पण करते हुए तीन बजे कोठा के अनन्य भक्त श्री गोविंदभाई छोटेभाई श्री बाबुभाई पटेल के यहाँ भोजन किये । आराम का समय ही नहीं मिला । अनेक हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करने से सतत दौडधाम करके स्कार्सडेल में वडु के श्री बलदेवभाई के यहाँ भोजन किये । जीतुभाई अमीन इत्यादि हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण किये । बाद में रात्रि २-३० बजे श्री रसिकभाई पटेल डांगरवाला के मोटेल पहुँचे । वे पूज्य महाराजश्री के दर्शन की लालच में बैठे थे । पू. महाराजश्री की आरती उतारकर गद् गद् हो गये थे । रात्रि निवास करके प्रातः वहाँ से चल दिये थे ।

अप्रैल २४-०७ मंगलवार को श्री बाबुभाई, श्री बिपीनभाई, श्री अनिलभाई तथा अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करके हरीसवर्ग श्री नटुभाई पटेल (डांगरवा) के घर पहुंच कर भोजन किये । जिन के सुपुत्र उत्पल ने सुंदर सेवा की । भोजन करके तुरन्त पदार्पण करना प्रारम्भ कर दिये । सायंकाल श्री भरतभाई पटेलने ल्युराल सीटी मीसीसीपी में होल में सुंदर सभा का आयोजन किया था । संतोने सुंदर प्रसादी की वस्तुओं का माहात्म्य समझाया था । प.पू. महाराजश्रीने सभी को अलौकिक आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सभी यहाँ नित्य सभा का आयोजन करते रहिएगा । रात्रि निवास भरतभाई पटेल के यहाँ किये थे ।

अप्रैल २५ बुधवार को प्रातः कालश्री भरतभाई के यहाँ से विदा होकर उनके बडे भाई श्री छोटुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण किये । डॉ. भक्तिभाई के खूब आग्रह पर उन्हे प्रसन्न करके दोपहर में उनके पुत्र श्री कौशिकभाई के यहाँ भोजन किये थे । पदार्पण करते हुए विना विराम के रात्रि में देउसणा के श्री घनश्यामभाई के यहाँ टेनेसी पहुँचे । नेशवील से बहुत हरिभक्त दर्शन के लिये पधारे थे । गुरुवार की प्रातः में विदा लेकर सतत पदार्पण करते हुए जेक्सन में भरतभाई, जगदीशभाई, मोखासण वाला के यहाँ बीच में पदार्पण करके रात्रि में इटास्का श्री

स्वामिनारायण मंदिर पहुंचे । रात्रि भोजन जयंतीभाई के यहाँ था ।

शुक्रवार प्रातः से शिकागो में पदार्पण प्रारम्भ हो गया । वीस-वीस पदार्पण करके दोपहर में श्री विष्णुभाई पटेल के यहाँ भोजन किये । सायंकाल भी सतत पदार्पण करके रात्रि मंदिर में आराम किये । शनिवार को अनेकों पदार्पण एकादशी होने पर करते रहे । महाराजश्री प्रत्येक हरिभक्तों के घर पदार्पण करके सभी को प्रसन्न किये थे । एकपदार्पण रमणभाई के यहाँ किये जो आज भी स्मरण करने योग्य है । दो हरिभक्त एक ही नामवाले नजदीक में रहते थे । जिस हरिभक्त रमणभाई के यहाँ पदार्पण करना था वह थोडे आगे था । दूसरे रमणभाई का घर पहले था जो क्रिकेट मैच देख रहे थे । खबर नही थी कि किस रमणभाई के यहाँ जाना है । पूज्य महाराजश्रीने ही यह रास्ता बतादिया । घर का दरवाजा खटखटाया, रमणभाई की पत्नीने दरवाजा खोला, बाहर देखा तो पूज्य महाराजश्री । अब वह दौडादौडी भाव विभोर होकर करने लगी । महाराजश्री पधार्या.... महाराजश्री पधार्या..... चादर लाओ, प्रसाद लाओ, दीपक आरती तैयार करो इस तरह का वातावरण बन गया । उनकी तो भाग्य ही खुल गयी । जिस प्रकार महाराज भी भक्तों के घर अचानक पधारते थे, वही स्थिति आज हुई । हरिभक्त आनंद में आ गये । २५०१ डोलर भेंट देकर जैसे वर्ल्ड कप जीत गया हो इस प्रकार दम्पती आनंदित हो रहे थे । अनेक पदार्पण करके दोपहर का भोजन जयंतीभई पटेल (डांगरवा) के यहाँ किये ।

सायंकाल सुन्दर सभा हुई । स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने सभा संचालन किया शा. धर्मवल्लभदास, शा. श्रीजीप्रकाशने प्रसादी के म्युझियम का महात्म्य समझाया प.पू. बडे महाराजश्रीने छोटे से छोटे भक्तों की सेवा स्वीकार करके म्युझियम की सेवा तथा प्रसादी की महिमा का वर्णन किया। छोटे-बडे सभी भक्तों ने अपनी सेवा की भेंट दी ।

रविवार को अनेक पदार्पण करके दोपहर का भोजन वडु के श्री किशनभाई पटेल के यहाँ किये । सायंकाल भी सतत पदार्पण करके रात्रिभोजन श्रीहरिभाई कडीवाला के यहाँ भोजन किये ।

सोमवार शिकागो से प्रयाण करके काणामजू श्री कनुभाई पटेल के यहाँ सभा किये । पदार्पण करते हुए भोजन श्री ईश्वरभाई पटेल के यहाँ किये । वहाँ से सायंकाल डिट्रोईट स्वामिनारायण मंदिर में पहुँचकर सभा किये । पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये ।

मंगलवार १ एक मई को प्रातः पदार्पण करके भोजन डॉ. अरविंदभाई पटेल (करजीसण) के यहाँ करके सायंकाल सीनसीनाटी जयेसभाई पटेल के यहाँ पहुंचकर भोजन किये । दूसरे दिन पदार्पण करके दोपहर काभोजन महेन्द्रभाई पटेल के यहाँ किये । सायंकाल हिन्दु टेम्पल में सुंदर सभा का आयोजन किया । सायंकाल डॉ. अमित तिवारी के यहाँ भोजन करके रात्रि निवास जयंतीभाई के यहाँ किये । दूसरे दिन जयंतीभाई पटेल के यहाँ भोजन करके कोलंबस से न्यूजर्सी पधारे ।

शनिवार ता. ५ मई के दिन श्री प्रहलादभाई पटेल (करजीसण) की सुपुत्री प्रीतिबहन - दर्पेशकुमार कनुलाल पटेल (राजपुर) के लग्न प्रसंग पर होल में पूज्य महाराजश्री पूज्य बडी गादीवाला तथा संत पधारे थे । सायंकाल भी इसी तरह रिसेप्सन में पधारे और हार्दिक आशीर्वाद दिये । सभी को दादा खाचर को पुत्री के विवाह जैसा आनंद मिला ।

रविवार ५ मई को विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर के २० वें पाटोत्सव के प्रसंग पर पूज्य बडे महाराजश्री पूज्या गादीवालाश्री एवं संतो के सांनिध्य में खूब धूम धाम से मनाया गया । सायंकाल श्री प्रहलादभाई की भांजी धर्मिष्ठा तथा डॉ. जिग्नेश शाह के विवाह के पूर्व प्रसग पर हाल में पधारकर आशीर्वाद दिये थे ।

६ मई सोमवार को बोस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथमवार पधारे थे । सायंकाल सुन्दर सभा का आयोजन हुआ । म्युझियम के लिए उत्तम धनराशि मिली । बुधवार प.पू. महाराजश्री संत-भक्तों के साथ इन्डिया के लिए प्रस्थान किये ।

प.पू. बडे महाराजश्री की यहाँ धर्मयात्रा खूब सुन्दर ढंग से पूर्ण हुई थी । जिस में अनेक हरिभक्तों को चरणस्पर्श दर्शन, भोजन, सभा इत्यादि का लाभ मिला था ।

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

"श्री स्वामिनारायण" मासिक की

जानकारी अपने हित में

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

मनुष्य अपने बहु मूल्य रत्न - सोना, चांदी, हीरा जवाहरात इत्यादि को बडे जतन से रखता है । इसीप्रकार अपनी सौख की वस्तुएं या संगीत का साधन पुस्तक, या धर्म ग्रन्थ भी सम्हाल कर रखता है ।

अपने सम्प्रदाय का "श्री स्वामिनारायण" मुखपत्र तो अति अमूल्य मुखपत्र है । जिससे सर्वोपरि श्रीजी महाराज की दिव्य अलौकिक वाणी का अपने संत-महंत, पू. आचार्य महाराजश्री, पूज्य बडे महाराजश्री का विद्वान लेखकों द्वारा परिचय होता रहता है । वचनामृत के ऊपर विवेचन, शिक्षापत्री के श्लोको का विवेचन, नंद संतो के काव्य-श्लोको का विवेचन, ये सभी इस पत्रिका द्वारा मिलते रहते हैं । यह सामग्री ही अपनी आत्मा का खोराक है । समय मिलते ही वांचने का आनंद मिलता है, जिसमें नये-नये रसास्वाद की प्रतीति होती है।

किसी असाधारण उद्वेग के समय भी इस पत्रिका का वांचन शांति देनेवाला है । यह असंख्य भक्तों का अनुभव है । साहित्य के अनेकों प्रकार है : सात्विक एवं असात्विक, शिष्ट एवं अशिष्ट, धार्मिक एवं शैक्षणिक साहित्यिक एवं सामाजिक, राजकीय इत्यादि साहित्य के स्त्र हैं । प्रति महीने हमे श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका में से कितने ही ज्ञान मिलते रहते है । उसका यदि निदिध्यासन किया जाय तो ही खबर पडेगी । समग्र गत महीने जहाँ जहाँ उत्सव हुआ हो, उसका फोटो भगवान की झांकी, आचार्य महाराजश्री का सभा संबोधन, शोभायात्रा, पदार्पण, श्रीहरि की आरती, अभिषेक इत्यादि का फोटो ग्राफ्स का आनंद इस पत्रिका के वांचने से मिलता है । यही हमारी आध्यात्मिक मूली है । घर बैठे हमें देश-विदेश में मनाये गये उत्सवों का ज्ञान-झलक मिलती रहती है ।

इस मुखपत्र के आद्यस्थापक प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री है । उन्हीं के प्रवचन तथा वर्तमानपीठाधीश्वर पूज्य आचार्य महाराजश्री के प्रवचनो के कुछ अंश बांचकर हमें अन्तरकी शांति मिलती है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर श्रीजी महाराज का चित्र आंखो में चिपक जाता है । श्रीहरि द्वारा स्थापित देवों का अभिषेक करते हुए पूज्य आचार्य महाराजश्री की तस्वीर नित्य चित्त को आकर्षित करती रहती है । अंतिम पन्ने पर विविध उत्सवो की झांकी निरखते ही बनता है ।

पूज्य शा. स्वामी निर्गुणदासजी जो अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत श्री अपनी मासिक पत्रिका के तंत्री है । वे अस्मदीयम् में श्रीजी महाराज का उदाहरण देकर हमें सीख देते रहते हैं । शिक्षापत्री-वचनामृत का सरल उदाहरण देकर हमारे जीवन को एकनिष्ठ बनाते रहते है । असंख्य विद्वानो के लेखों की कोई बात ही नही ।

वर्तमान में एक मित्र ने आल्बम बताया । जब से श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका प्रारम्भ हुई तब से आजतक का मास-दिन-तिथि फोटो के साथ निर्दिष्ट है । इतना ही नहीं, उसने वचनामृत के लेख, शिक्षापत्री का लेख, पू. आचार्य महाराजश्री के ऊपर के लेख, की फाईल बताकर कहा कि "अपनी मासिक पत्रिका पस्ती में नही देना चाहिए । इस में तो भगवान श्रीहरि की तथा श्रीहरि के अपर स्वस्त्र पूज्य आचार्य महाराजश्री की तस्वीर होती है । अतः पूज्य है । उन्हे फाडते समय कैसा लगेगा ? इस मासिक का सभी अंक सजाकर रखना चाहिए। कभी-कभी लेख वांचते रहना चाहिए। जिससे अपनी भक्ति-श्रद्धा दृढ होती रहेगी । यह पत्रिका नास्ता

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

जागृतता से एकता की तरफ

- शा. अचलप्रकाशदास गुरु पूर्णप्रकाशदासजी

इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में लिखा है कि -

एकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायण
महेशयोः ॥४७॥

नारायण एवं शिवजी को एकात्मभाव से जानना चाहिए । इस शब्द से सम्पूर्ण जगत का एकात्मभाव प्रदर्शित हो जाता है । एक दूसरे का विरोध मानव संस्कृति का विरोध है । लेकिन आज का मानव जागृत क्यों नहीं होता । यह समझ में नही आ रहा है । आज समाज पीडा का अनुभव कर रहा है, दुःखी हो रहा है, अशांति का अनुभव कर रहा है, कारण यह कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये दसरे का शोषण कर रहा है । इससे समाज में आपसी वैर बढ़ रहा है । जिससे अपनी संस्कृति का नाश हो रहा है । किसी को भावी पीढ़ी की चिंता नहीं है । समाज के मस्तिष्क पर अनेकता स्मी तलवार लटक रही है । फिर भी समाज इसका अनुभव करते हुए भी जागृत नहीं हो रहा है । समाज के कल्याण हेतु बलिदान तो देना ही पड़ेगा । चाहे आत्मबलिदान हो या समय का बलिदान ।

अपने भारत देश की संस्कृति ऋषियों की है जिसे बडी तपस्या के साथ सिंचन कर बढाया था - तो क्या हम उसे यों में ही नष्ट कर देंगे । भगवान भी इस पृथ्वी पर अवतार लिये हैं । फिर भी अपने देश में कितनी अशांति कितनी अराजकता चारो तरफ फैली है । जब हमें इतना सहन करना पड़ा हो तो आने वाली पीढी की क्या हालत होगी । जगत का संचालन करने वाले परमात्मा में यह भेदभाव नहीं है । तो हम क्षुद्र मनुष्यों में यह भाव क्यों है ?

जात नहीं जगदीश कुं,
हरिजन कुं क्या होय ।
जात भात कुल कोच में
डूब मरो मत कोय ॥

परमात्मा के यहाँ कोई विषमता नहीं है । राम-रहीम एक है । काशी-कोबा एक है । तो इस एकता में भी अनेकता क्यों ? परमात्मा आत्मीय वैर के लिए इस मानव शरीर की रचना नहीं की बल्कि आत्मीय प्रेम के लिये किया है । इस शरीर से झगड़ा झंझट छोड़कर उस परम चिरन्तन परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है । आज व्यक्ति अपनी कर्तव्य निष्ठा को भूल गया है । आकाश में हजारो तारागण हिल मिलकर रह सकते है, संसार के अन्य प्राणी हिलमिलकर रह सकते हैं तो क्या मानव का यह कर्तव्य नहीं है ?

व्यक्ति-व्यक्ति का सम्बन्ध दृढ बनाने के लिये सभा का आयोजन किया जाता है । लेकिन इन सभाओं मे मात्र चर्चा ही होती है, बाद में तो नेताओं की भाषा जैसी बात है । ऐसी सभाओं से मात्र धन का व्ययही होता है । इस में सच्ची मानवता कहाँ है । जबतक कुटुम्ब, समाज अथवा सम्प्रदाय जागृत नहीं होगा, तब तक एकता के अभाव का अनुभव सभी को होता रहेगा । लेकिन आज -

किस रावण की बांहे काटू,
किस लंका में आगे जगाउँ ।
घर-घर रावण घर घर लंका,
इसमे दाम कहाँ से लावुं ॥

उस काल में तो माता सीता का हरण करने वाला रावण एक ही था । तब केवल एक ही राम की जरुरत थी । लेकिन आज तो घर-घर में रावण है । तो प्रत्येक व्यक्ति को राम बनना पडेगा । लंका का दहन करने के लिए प्रत्येक को हनुमान बनना पडेगा । तभी रामराज्य सम्भव है .

समाज का युवाधन आज फैशन एवं व्यसन में अपना जीवन बर्बाद कर रहा है । ऐसे युवानो में योग्य विचार स्थापित हो इसके लिये समय पर मार्गदर्शन देना आवश्यक है । समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति की निंदा करना, षडयंत्र करना, बदनाम करना, या उनमें दोष देखना क्या यही जागृतता है ? समाज तभी जागृत होगा जब वह अपने में दोष देखने लगेगा । वह पहले स्वयं सुधरे फिर समाज की बात करे ।

आज समाज, कुटुम्ब या सम्प्रदाय में प्रोत्साहन देने के बदले में हतोत्सहित या पैर काटने की बात होती है । मानसिक ढंग से व्यक्तिको लंगडा-लूला बना दिया जाता है । योग्य व्यक्ति को योग्य स्थान नहीं दिया जाता है । बालक को बालक जैसा नहीं समझना होगा । क्योंकि बालकों में अपार शक्ति होती है ।

पंडितजी - एक बालक से कहे कि तू मेरा शिष्य बन जा मै तुझे स्वर्ग का राज्य दूंगा ।

बालक - पंडितजी ऐसा कीजिये कि आप मेरे शिष्य बन जाइये मै आपको दिल्ली का राज्य देदूंगा ।

पंडितजी - क्या दिल्ली तेरे बाप की है ?

बालक - तो क्या स्वर्ग आपके बाप का है ?

शक्ति सभी के अन्दर है । लेकिन बुजुर्ग लोगों को चाहिए कि प्रेरणा दे । किसी भी क्षेत्र का विकास करना हो तो उसे विशाल मन का होना पडेगा । बहुत सारी छूटछाट करनी होगी । हृदय को विशाल बनाना पडेगा ।

सहिष्णुता, धैर्य, समानता, मानवता, इसके साथ ही उच्च विचारो का संयोजन भी परमावश्यक है ।

इतना होगा तो ही प्रगति सम्भव है । आज तो सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिये प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है, इस में कारण यह कि नीति-न्याय की समतुला बराबर नहीं है, इस लिये व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठा है ।

जागृतता ही सुखी एवं शांतिमय जीवन का बीज है ।

पृष्ठ ९ से आगे..... श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र "श्री स्वामिनारायण" मासिक की जानकारी अपने हित में करने के लिये नहीं है । यह मासिक पत्रिका का ज्ञान की सरिता है ।

वर्तमान समय में प्रत्येक मासिक पत्रिका में भक्ति सुधा विभाग में पूज्य गादीवालाश्री के उत्तमोत्तम प्रवचनो को छापा जाता है । उसी में पूज्या सांख्ययोगी बहनो के लेख एवं गृहस्थाश्रमी बहनो के भी लेख ज्ञानप्रद होते है जो छापे जाते है । इसके साथ ही जब से पत्रिका प्रारम्भ हुई तब से बालको को उपदेसार्थ सत्संग बालवाटिका शा.स्वा. हरिकेशवदासजी द्वारा प्रेरणास्य रहती है । शा. भक्तिनंदनदास गु. पू. पी.पी. स्वामी द्वारा प्रश्नपेटी भी सुसंस्कार एवं सत्संग को दृढ बनावे ऐसी है । देश विदेश के सत्संग में क्या हो रहा है, कहाँ गुस्मूर्णिमा मनाई गयी, कहाँ विष्णुयाग हुआ, कहा महाराजश्री का पदार्पण हुआ, कहाँ मूर्ति प्रतिष्ठा हुई, इत्यादि देश-विदेश के समाचार से प्राप्त होता रहता है ।

समग्र मास में आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की समरेखा द्वारा यह ज्ञात हो जाता है कि हमारे महाराजश्री सत्संग के लिये कितना पुस्मार्थ करते हैं । इसका ख्याल आये बिना नहीं रहता कि हजार कि.मी. की मुसाफरी है यह तो रात दिन की है । कठोर परिश्रम युक्त यह यात्रा होती है । कोई सत्संगी विस्तर पर हो तो भी वह वांचकर तृप्ति का अनुभव करता है । ववविध लाइब्रेरियो को यह मासिक पत्रिका भेंज कर लोकोपभोग्य बनाया जा सकता है । कहने का तात्पर्य यह कि. यह श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका एक पवित्र अंक है - पवित्र ग्रंथ है । इस रहस्य को जो जानेगा वह बडी सुन्दरता से इसे सजायेगा ।

सत्संगी मात्र को दान भेंट नियमित करने के संदर्भ में

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने सप्रदाय को अमूल्य ग्रन्थ शिक्षापत्री श्लो. १४७ के अनुसार आज्ञा की है कि प्रत्येक आश्रित जन अपने आवक का दशवां भाग या जो कमजोर हों वे हरिभक्त वीसवां भाग दान भेंट निकाल कर अपने जीवन का व्यवहार करें । जो हरिभक्त जिस देश में रहते हों वे उसी देश के मंदिर में दान भेंट को देकर रसीद प्राप्त करले, इसके साथ अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का नाम लिखा कर भेंट के साथ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की कोठार ओफिस में भर कर पहुंच अवश्य प्राप्त करले ।

विशेष सूचना : श्रीजी महाराज की आज्ञा अनुसार प्रत्येक हरिभक्त दान भेंट की धनराशी अन्यत्र किसी भी संस्था में न दे, इसका ध्यान रखें ।

सत्संग सुरभि :

महाराज आपको बुला रहे हैं

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

वडोदरा के नाथ भक्त महाराज के परम भक्त थे । उनके घर शाक भांजी की खेती होती थी । वही उनका व्यापार था, उसमें २-४ पैसा बचे तो भगवान के दर्शनार्थ चल देते थे । सभी धन महाराज, संत एवं मंदिरो में दे देते थे ।

एकबार महाराज का दर्शन करने गढडा गये थे - उस समय दो- चार दिन गढडा रुक गये बाद में महाराज की आज्ञा लेकर वापस आने के लिये निकल गये । बडी तीव्र गति से वे आने में लगें थे । फिरभी गढडा से वडौदा २०० मील दूर कम से कम आठ दिन पहुंचने में लगे ।

नाथ भक्त के जाने के बाद महाराज थोडी याद करने लगे । नाथ भक्त कहाँ गये उन्हें बुलाओ । उस समय कोई भक्त बोला नाथ भक्त बडौदा जाने के लिये निकल गये हैं । किसी दूसरे भक्त से कहे आप जल्दी जाइये उन्हे वापस बुला लाइये ।

महाराज की आज्ञा हुई कि भक्त बुलाने चल दिया । नाथ भक्त को यह खबर नहीं थी कि मेरे पीछे कोई चला आ रहा है । नाथ भक्त इतनी तीव्र गति से चल रहे थे कि कब सुबह हुई कब शाम हुई लेकिन जितनी गति से नाथ भक्त चल रहे थे उतनी गति दूसरे भक्त की थी फिर भी रात दिन चलने पर भी सातदिन बीतने के बाद, आठवें दिन प्रात: विश्वामित्री नदी को ज्यों नाथ भक्त पार करने जा रहे थे, उसी समम भक्तने पीछे से आवाज लगाई कि - हे नाथ भक्त ? नाथ भक्त खडे रह गये, भक्त उनके पास पहुंच कर कहने लगा "महाराज आपको बुला रहे है ।"

महाराज बुला रहे है "यह शब्द सुनते ही नाथ भक्त बडोदरा से मुख मोड़े और भक्त के साथ गढडा के लिए वापस हो लिये सामने ही बडोदरा था फिर भी कहे चलो ?"

हरिभक्त ने कहा "घर तक आ गये हैं तो परिवार से मिल लीजिये ।" नाथ भक्त एक पल विना बिलम्ब के कहे नही "महाराज बुला रहे है - अन्यत्र समय बिगाडने की जरुरत नहीं ।"

उसी समय हरिभक्त के साथ गढडा चार दिन में ही पहुंच कर महाराज को प्रणाम करके पास बैठ गये ।

बीच में आठ दिन बीत गये थे इस लिये महाराज ने पूछा कि इतने जल्दी क्यों चले आये ?

दूसरे हरिभक्त ने सम्पूर्ण बात बताई । बात सुनकर श्रीहरि खूब हंसे । महाराज नाथ भक्त का स्कन्ध थप-थपाये और कहे कि - बहुत अच्छा ! लेकिन जब घर के नजदीक पहुँच गये थे तो घर जाकर आये होते ।

नाथ भक्तने कहा महाराज ? आपकी आज्ञा में बिलम्ब सहन नहीं होता, बिलम्ब किये होते तो आपका दर्शन तुरन्त मिल गया यह सम्भव नहीं होता ।

महाराज उस हरिभक्त से पूछे कि जब आप को घन्टे दो घन्टे में नाथ भक्त नही मिले तो वापस आजाना चाहिए था । इनके पीछे बडोदरा तक दौडने की क्या जरुरत ? हरि भक्त हाथ जोड़कर बोले महाराज ? आपकी आज्ञा थी कि नाथ भक्त को बुलालाइये तो हम बिना लिये वापस कैसे आयें ।

महाराज भक्त की बात सुनकर पुन: खूब हंसे । मेरे भक्त कितने भोले हैं । ऐसे थे महाराज के भक्त । महाराज की आज्ञा हि इनका मतबल था । बाकी सभी तुच्छ घर तक पहुंचकर नाथ भक्त भगवान की आज्ञा होते ही परिवार से विना मिले वापस आ गये । यहाँ देह से सम्बन्ध रखने वालो के प्रति ममत्व बुद्धितुच्छ हो गयी । महाराज बुला रहे हैं यही हमारी भाग्य है ऐसी आत्मबुद्धि उनकी बनी रही, यही श्रेय का मार्ग है ।

गढपुर में सभा चल रही थी जिस में नाथ भक्त को बुलाना एवं वह भक्त जो पीछे-पीछे वडोदरा तक जाकर बुलाकर साथ लाया इन दोनो की महाराज में एक निष्ठा देखकर आश्चर्य युक्त बना देती है । जैसे महाराज अपने सर्वोपरि हैं ऐसे अपने भक्त भी सर्वोपरि है । ऐसा भाव सभी में आता रहे तो प्रत्येक जीव मात्र का कल्याण होने में सन्देह नहीं ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान भक्तका ध्यान रखते है

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

किसी समय एक गृहस्थ के घर मेहमान आये । मेहमान अपने अपने विषय के निष्णात थे । कोई संस्कृत के पंडित थे, कोई नीति शास्त्र के पंडित थे जैसे - विदुर नीति, याज्ञवल्क्यनीति इत्यादि । एक राजकारणी थे एवं डॉ. थे । इस प्रकार सभी अपने विषय के जानकार थे । सभी आये, सभी को सम्मान पूर्वक बैठाया गया । सभी के स्वागतार्थ सद्‌गृहस्थ की पत्नी दौडधूप करने लगी । उनका एक छोटा बालक था, इस दौडधूम में उस बालक का किसी को ख्याल ही नही रहा, वह जोर जोर रोने लगा । इस प्रकार का चिल्लाकर रोते चारो निष्णात सुने तो आपस में चर्चा करने लगे कि डॉ. यह आप का विषय है - क्यों रो रहा है ? अरे भाई ! हम तो मिलने आये थे कोई साधन तो लाये नहीं । लेकिन..... थोडा देखिये तो सही । डॉक्टरने देखा तो शरीर का संतुलन ठीक था । कोई तकलीफ तोनहीं थी । भूखा भी नहीं है उस के पेट में दूध है । फिर भी ऊपर नीचे सभी जगह देखा कोई तकलीफ का कारण ज्ञात नहीं हुआ । नीति शास्त्रवाले ने कहा, लाइये हम प्रयत्न करके देखते हैं । बालक के पास जाकर कहते हैं किअरे बालक ! बिना कारण क्यों रो रहे हो, इस प्रकार रोना ठीक नहीं, वह नीतिवाला शास्त्रज्ञ तो सभा मैं जैसे कोई प्रवचन करता हो इस प्रकार प्रवचन कर दिया, लेकिन बालक में कोई फर्क ही नहीं पडा । इसके बाद राजकारणीभाई खडा हुआ और कहने लगा - कि इस देश में किसी बालक को रोते नहीं देना है । रोने देखना नहीं है । कोई रोता होतो उसे देखना नहीं है। तूं रोना बन्द करदे मेरे भाई । अब वह बालक तो और जोर से रोने लगा। अंत में संस्कृत के महारथी पंडितजी खडे हुए हे बालक ! तू पूर्वजन्म में कितना अच्छा जीव था । इस घर में पूर्वके संस्कार से ही तुम्हारा जन्म हुआ । अब तूं रोना बन्द करदे । अव वह और अधिक रोने लगा था । सद्‌गृहस्थ की पत्नी घर में से शरबत बना कर लाई मेहमानो के सामने रखकर बच्चे को गोंद में उठा लिया और बालक शांत हो गया । यह देखकर अभ्यागत चारो निष्णांतो को बडा आश्चर्य हुआ कि हमलोग इतना सबकुछ किये बालक शांत नहीं हुआ, लेकिन मांने अपने गोंद में लिया - कि बालक शांत होगया । रोना बन्द हो गया । उन सभी में से संस्कृत के पंडितजीने कहा - संस्कृत व्याकरण में हो ..... लो ..... लो ..... नहीं आता । साहित्य - वेदान्ताचार्य हूं लेकिन ऐसा शब्द कहीं नही मिला । यह हो ..... लो ..... लो ..... कौन सा मंत्र है । चारो विषय निष्णात चलते समय महिला से कहने लगे बहन ! यह कौन सा और कहाँ आता हुआ मंत्र जिसका आप तुरंत प्रयोग कीऔर बालक चुप हो गया । हम लोगों को बताइये ? नहीं, आप लोग इसे नहीं सीख शकते हैं । फिर भी प्रयास करेंगे । बहन ने कहा आप लोग तैयार है, हाँ, तो आप लोगों को माँ बनना पडेगा । तभी यह मंत्र आप बोल पायेंगे । मुमुक्षु आत्मा के साथ जब काम करवाना हो तो सद्‌गुरु को माँ बनना पडेगा ।

मित्रो ! भगवान कितने दयालु हैं। हम पुत्र बनेगे तभी भगवान माँ बनेंगे । जिस प्रकार माँ बेटे के सम्बन्ध में पोथी-पुराण की जरुरत नहीं होती, जिसे ज्ञानी भी नहीं समझ सकते, भगवान एवं भक्त के सम्बन्ध को कोई ज्ञानी नहीं समझ सकते, लेकिन इसको समझने के लिये भक्त बनना पडेगा । माता का हो ..... लो ..... लो ..... की आवाज जिस प्रकार बालक समझता है ठीक वही स्थिति भगवान के हो ..... लो ..... लो ..... को भक्त को समझना चाहिए ।

इसलिये भगवान से दूर नहीं होना चाहिए उनके नजदीक रहने के लिये इतना ध्यन अवश्य रखना पडेगा - जिस प्रकार रोते बालक का ध्यान माता रखती है ।

रोते शिष्य का ध्यान महात्मा रखते हैं ।
रोते भक्त का ध्यान परमात्मा रखते हैं ।
भगवान अपना ध्यान अवश्य रखेंगे ।

•

अजब रक्षा अलबेले की

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भारत के उत्तर सरहद का छोटा सा

गाँव वेरवाल । इस गाँव के लोग एक राक्षसी काम कर दिये । सभी ने मिलकर स्वामी संतदासजी को खूब मारा । आराम की जगह पर आग लगादिये । मोक्ष दातार ऐसे संत का तिरस्कार लोगोने करदिया । ऐसे पुरुष तो लोगो के कल्याणार्थ विचरण करते है । अभी तिवेट के राजा को मोक्षगामी बनाकर आये थे । लेकिन अविवेकी लोगोने संत की पहचान न करके, मोक्ष न मांगकर सबसे बडी मूर्खता की ।

मन को सुधारनेवाले संत को चोर समझे । संतदासजी स्वामी बद्रिकाश्रम की यात्रा करके गुजरात की तरफ आये थे । सायंकाल होगया, अंधकार होने लगा, नजदीक में वेरवाल गाँव दिखाई दिया । गाँव का नाम थोडा विचित्र था । फिर भी मधुर था । जगत के जीवो को इस लोक के अलांवा अर्थात् माया ममता को छोडकर कुछ दिखाई नहीं देता । कुछ भी करना हो तो भी परमात्मा की याद नहीं आती । चन्द्रलोक तक जाकर वहाँ भी किसी ऊँचे पर्वत को अपनी पत्नी का नाम रख आयेगा । लेकिन प्रभु की याद नहीं आवे ।

संपूर्ण दिन काम धन्धा करके सायंकाल भी भगवान का नाम नहीं आता । सायं होते ही सारे गाँव के लोग किसी एक जगह अथवा गाँव के बाहर एकत्रित होकर गाँव की पंचाइत करेंगे लेकिन भगवान का नाम नहीं लेंगे ।

वेरवाल गाँव के बाहर बैठे इस टोले ने संतदास को गाँव की तरफ आते देखा तो जैसे कोई अलमस्त आ रहा हो जिसे देह की सुधि नहीं हो, जिसे मान अपमान का भान नहीं था ।

बैठे टोले में से किसी ने कहा यह कौन आ रहा है ? कोई साधु होगा । लेकिन इस समय ! अन्धेरे में शरीर पर कपडे का कोई ठिकाना नहीं । कोई चोर तो नहीं है ? दूसरे ने कहा हाँ - हाँ सही बात है । अन्धकार में आनेवाला चोर ही होता है, किसी अन्यने कहा । इसी तरह सभी अटकर लगा रहे थे । बाद में श्रृंगाल जैसे एक साथ चोर-चोर-चोर करने लगे । किसी ने पत्थर हाथ में लिया किसी ने लकड़ीया लिया, कोई दौडकर डोरी लाया, इस तरह चोर समझकर सभी दौड पडे ।

लेख के प्रारम्भ में ही हमने लिखा कि उद्धत मनुष्य क्या नहीं करता ? स्वामी के हाथ में कुछ नहीं था, वस्त्र भी जिसकी शरीर पर पूरे नहीं थे । जिसके मुख से मात्र स्वामिनारायण मंत्र का उच्चारण हो रहा था । फिर भी किसी ने विचार नहीं किया यह मूर्खता का लक्षण नहीं है तो क्या है । सही तो यह कि चोर से छला जाता है और साधु को चोर मान लिया जाता है । वह उद्धत टोला संत ऊपर धूल, पत्थर फेंकना चालू कर दिया, हाथ पैर बांध दिया ।

ऐसे सिद्ध संत थे फिर भी शांति से बैठे रहे । लेकिन उन दुष्टों ने नाना प्रकार की बकवास करने लगे - कोई कहता बडा चोर है, कोई कहता बांध क र रखो, कोई कहता हाथ-पग काट डालो, कोई कहता मारडालो, इस प्रकार कहकर भाला, तलवार इत्यादि लेकर दौडपडे । इतने में पांच छ मनुष्यो का नाना प्रकार के अस्त्रो से सज्ज टोला सामने से आकर ललकारा अरे मूर्खो ? मेरे वेटे को क्यों मारते हो, यह तुम्हारा बाप चोर नहीं है । चोर तो तुम लोग हो । यह सुनते ही सभी के मुख काले हो गये ।

आने वाले वे पांच व्यक्ति भगवान स्वामिनारायण थे । संबंधी बनकर संतदास की रक्षा करने आये थे । पापियो के पाप का फल मिल गया । भगवान यह सब करके अदृश्य हो गये । स्वामी भी जैसे उनके साथ कुछ नहीं हुआ हो इस तरह हंसते हुए आगे चल दिये । भगवान अपने भक्त की रक्षा मित्र-माता-पिता इत्यादि स्प में करते है । लेकिन दृढ आश्रय होना चाहिये ।

श्री नरनारायणदेव के मंदिर का सेवा यज्ञ

सभी सत्संग समाज को ज्ञात हो कि भगवान श्री स्वामिनारायण ने जिन महाप्रभु भगवान नरनारायदेव को सर्व प्रथम अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया था । यह मंदिर भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से स.गु. आनन्दानंद स्वामी ने तीन शिखर मंदिर तैयार करवाया था । जिसे बने हुए १८५ वर्ष बीत गया । इसके जीर्णोद्धार करने का विचार किया गया है । जिसमें सम्पूर्ण मंदिर के साथ शिखर से लेकर फ्लोरिंग तक मारबल का पत्थर लगाने की योजना है । इस मंदिर के चारो तरफ प्लींथ को भी नवीनता से युक्त शिल्प शास्त्र के अनुसार नये ढंग से किया जायेगा । इस अलभ्य सेवा का लाभ प्रत्येक हरिभक्त को लेना आवश्यक है । इसलिये कोठार में रकम जमा कराकर पक्की रसीद प्राप्त करलें । विशेष जानकारी के लिये प्रत्यक्ष मिले ।

लि. महंत स्वामीकी आज्ञा से

।। भक्तिसुधा ।।

सद्‌गुण की सागर प.पू.अ.सौ. प्रगटलक्ष्मी स्वरुपा दोनो गादीवाला

- नानी बहन (विराटनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर (ओढव)

भक्तिसुधा अंक के वाचको को जयश्री स्वामिनारायण आप सभी को ऐसा होगा कि जो बात मैं लिखने जा रही हूँ वह सभीको ख्याल होगा । फिर भी श्रीहरि ने जिसकी महिमा लिखी है, उस महिमा का गान हमें भी करना चाहिए । श्रीहरि स्वयं अपने स्थान पर जिसकी प्रतिष्ठा किये है, उस स्थान की कितनी महिमा होगी । उसे व्यक्त करना कठिन है । उन्ही की संतान, उन्ही का कुल है इस विषय में क्या कहना ? ये तो साक्षात् लक्ष्मी हैं । उन्हें हम गादीवाला कहते है । कितने लोगो को ऐसा होता है कि इस विषय में सही जानकारी मिले तो अच्छा ।

पूज्या बडी गादीवालाश्री जिस गादी स्थान को ४० वर्षो से सुशोभित की आज भी वही शोभा नित्य निरन्तर विद्यमान है । सत्संग को जो प्रेम, आत्मीयता, त्याग, पूज्या बडी गादीवाला ने दिया उसे महिला सत्संग समाज कभी भूल नहीं सकता है । जिस प्रकार अपने पूज्य बडे आचार्य महाराजश्री के गुण अपार है, जिसे लेखनी लिखने में मूक हो जाती है, इसी तरह पूज्या गादीवालाश्री के गुणों को लिखना सम्भव नहीं है । पुरुषो के व्यवहारकी अपेक्षा स्त्रियों का व्यवहार अत्यन्त कठिन होता है । पुरुषों के किसी भी प्रश्न का समाधान पूज्य बडे महाराजश्री त्वरित करते है, लेकिन महिला वर्ग के प्रश्न का समाधान कठिन होने पर भी, गादीवालाश्री इतनी सरलता इतनी कुशलता से कर देती है, कि विचार भी नही किया जा सकता है । सभी खुश-खुश हो जाती है । इनके व्यवहार में, इनकी दृष्टि में जादू है । दर्शन करते ही, वाणी सुनते ही लोग मंत्र मुग्ध हो जाती है । इनके दर्शन का आनंद ही कुछ अलौकिक होता है । श्रीहरि द्वारा स्थापित यह परंपरा अन्यत्र कहाँ है । अजोड परम्परा महा प्रभुने स्थापित किया है । भगवान ने दो गादी की स्थापना की थी । जिसमें प्रथम अहमदाबाद एवं द्वितीय वडताल - दोनो देश की गादीवाला का महत्व अद्‌भुत है । फिर भी अपनी गादीवाला का जीवन तो सभी के लिए औदाहार्य बनकर है । और आनेवाली परम्परा जिसका अनुकरण करती रहेगी । दयालु स्वभाव, चमकता चेहरा, गम्भीर एवं मृदुवाणी, जिनके स्वरुप में कभी मनोमालिन्य आज तक किसीने नहीं देखा । सामनेचाहे कितना भी कोई दुखिया आवे, देखने के साथ ही उसका दुःख-दर्द खत्म हो जाता है । इतना ही नहीं घर के प्रत्येक की जिसे खबर है, जैसे अन्तर्यामी हों और घर का सभी वातावरण जानती हों । एक-एक करके सभी को पूछती है, आप वर्षो पहले मिली हों, जब आप मिलने जायं तो देखने के साथ ही प्रत्येक का नाम कम्प्यूटर की तरह बोल जाती है । इसके साथ उनके सुख दुःख को पूछती है, क्या यह दैवत्व नहीं है ? कहीं देश-विदेश में जब भी जहाँ मिली हों वह स्थल तक वे बोल जाती हैं । दिन-समयतक उन्हें ख्याल रहता है । कोई साधारण महिला हो वह अपने परिवार अथवा आत्मीय व्यक्तियों का भी ध्यान नहीं रखपाती, उसे सभी के नाम भले न स्मरण हों लेकिन यहाँ तो लाखों की संख्या में सत्संग समाज की महिलाओं का जो प्रत्येक गतिविधि जानती हो वें प्रत्यक्ष देवता ही है । ऐसी गादीवाला दुनिया में अन्यत्र कहाँ मिलेंगी ?

यह अनुभव की बात है । उपरोक्त सभी बातें अपने सत्संग की सभी बहने जानती है । श्रीजी महाराजने सत्संग की जितनी बहने है उनके गुरु के रुप में गादीवाला की एक परम्परा बनाई है । यही सत्संग की बहनो के लिए गुरुहैं । इनकी अन्न-वस्त्र-धन इत्यादि द्वारा पूजन अर्चन करना चाहिये । इस बात की प्रामाणिकता श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री के ७१ वें श्लोक से किया है । इस आज्ञा द्वारा सभी बहनें गादीवालाश्री की प्रसन्नता प्राप्त करके अपने जीवन को अवश्य धन्य बनावे । ये प्रत्यक्ष लक्ष्मी स्वरुप है । इन के चरणों में कोटि-कोटि बन्दन करके, आत्म समर्पण करके इहलौकिक सुख को प्राप्त करलें ।

•

तीर्थ मूर्तिमान हैं

- रलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

भगवान स्वामिनारायण पवित्र चैत्र

मास की शुक्ल पक्ष दशमी तिथी को ऊँझा से सिद्धपुर पधारे, उसके दूसरे दिन पवित्र कामदा एकादशी थी इसलिये प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में सरस्वती नदी में संत भक्तों के साथ स्नान के लिये पधारे उस समय सरस्वती नदी ने महाप्रभु को आते देखा तो स्वयं सुवर्ण की थाली में पूजन सामग्री लेकर षोडशोपचार हेतु सामने गयी ।

उस समय सरस्वती नदी मानो अक्षरधाम से लक्ष्मीजी सेवा करने के लिये पधारी हों ऐसी लग रही थी, ऐसी आभाचारो तरफ फैल रही थी । प्रथम पंचाग प्रणाम महाप्रभु का किया बाद में षोडशोपचार से श्रीहरि की पूजा-अर्जन-आरती करके गद्‌गद् हो गयीं और प्रार्थना करने लगी ।

हे महाराज ! आप बहुत समय के बाद दर्शन दिये हैं । हे नारायण ! मेरे पिता जगत स्त्रष्टा ब्रह्माजीने मुझे वचन दिया था कि सरस्वती ? नदी स्म में एवं कुंवारिका के स्म में तुम हो इसलिये तुम्हे वचन देता हूँ कि कलियुग में अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति पूर्ण पुस्त्रोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण जब सिद्धपुर में पधारेंगे तो तुम में स्नान करने अवश्य आयेंगे । आज मैं वर्षो से आपके दर्शन की प्रतीक्षा में थी । अब आप इस बिन्दु सरोवर (सरस्वती) में स्नान के लिये हमें कृतार्थ किये हैं इसलिये आप मेरी पूजा स्वीकार करें । इस प्रकार मूर्तिमान सरस्वती देवी की प्रार्थना एवं पूजा स्वीकार करके श्रीहरि बहुत प्रसन्न हुए । वरदान देते हुए कहे कि हे सरस्वती ! इस युग में मेरा दर्शन भाग्यशालियों को ही मिलता है । हम प्रत्येक तीर्थ को अपना दर्शन देकर पावन किये हैं । हम अपनी इच्छा से ही अपने भक्तों को दर्शन देते रहते हैं । इसलिये हे देवि ? मेरे नाम का स्मरण करते हुए जो भी आपके पुण्यजल में स्नान करके यहाँ दान पुण्य करेगा उसे हम अपने अक्षरधाम में लेजायेंगे । और आप भी जब तक वसुन्धरा है तब तक यहाँ निवास करना । जब प्रलय होगी तब आपको हम अपने धाम को प्राप्त करायेगें ।

इस प्रकार श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभुने सरस्वती देवी को वरदान देकर कृतार्थ किया । यह बरदान प्राप्त करते ही सरस्वती नदी में चारो तरफ तेज फैल गया । यह देखकर सभी संत-हरिभक्तों को बडा आनंद हुआ और महा प्रभु से प्रार्थना करने लगे, हे महाराज ! इस स्म में ये देवी कौन थी ? तब भगवान बोले हे भक्तजन ! यह साक्षात् मूर्तिस्म में सरस्वती देवी थी । जो हमारे दर्शन के लिये आयी थी । हमारी इच्छा से ही आप सभी को भी दर्शन मिल गया सरस्वती देवी सदा मूर्तिस्म में हमारा दर्शन करने आती हैं ।

यह सुनकर सभी ने कहा हे महाराज ! तीर्थ भी प्रत्यक्ष होते हैं यह आज ज्ञात हुआ ।

इस प्रकार पवित्र सिद्धपुर तीर्थ की महिमा श्रीहरिने सभी को बताई । श्रीहरि जब जब सिद्धपुर पधारते तब-तब सरस्वती नदी में अवश्य स्नान करते थे । पुण्य सलिला सरस्वती नदी के किनारे चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में एकादशी से पूर्णिमा तक इसी तीर्थ में बडा उत्सव श्रीहरिने किया था ।

सुनो संत हरिजन रे
काले तो जावुं छे सिद्धपुर
मोटु तीर्थ छे ते प्रमाण
जेना देव करे वखाण
तेमा करवुं जेने स्नान
मूकी देवा अंतर अभिमान
काम-क्रोध रसास्वाद
कोई राखवा नही प्रमाद
एम वात करी घडीवार
आतो संक्षेपथी कह्यो सार

(श्री घनश्याम लीलामृत सागर उतरंग-४६)

•

भगवानका निश्चय भगवान से ही होता है

- भगवती बहन कांतीभाई सोनी
(पाटण)

कारियाणी गाँव में मांचाखाचर एवं भोजाभाई दोनो पूर्व जन्म में शुद्ध मुमुक्षु थे । दोनो प्रणयमार्गी वाले थे । अपने मोक्ष के लिये खूब प्रयास कर रहे थे ।

एकबार श्रीजी महाराज कारियाणी पधारे उस समय मांचा खाचर अपने सत्संगी बनने का पूर्व वृत्तान्त श्रीजी महाराज को कहते हैं । मैं एवं भोजाभाई प्रणय मार्गीय पंथ के अनुगामी थे । एकबार हमदोनो काशी की तीर्थयात्रा में गये । वहाँ गायो को चारा खिलाया । इसी तरह ब्राह्मणो को भोजन कराया । कांवर भर के गंगाजल कारियाणी लाया । बाद में हमदोनो ने निश्चय किया कि जो कोई महापुस्त्र हम दोनो में से एक को पहले मिलेगा वह एक दूसरे को बतायेगा ऐसा निश्चय करके गंगाजल की कांवर लेकर जेतपुर आये । वहाँ गाँव के बाहर चरवाहे गाय चरा रहे थे । वे चरवाहे बिना

बुलाये बोले कि इन्हे हम में विश्वास होतो हम इन्हे भगवान से भेंट करा सकते हैं । यह वात सुनकर भोजाभाई ने कहा हाँ हम चलेंगे । तब वे बालक रामांद स्वामी के पास ले गये । बाद में रामानंद स्वामी के पास कथा वार्ता दर्शन, ज्ञान, सुनकर उन्ही को भगवान समझ गये । कांवर के गंगाजल से उनको स्नान कराया बाद में स्वामीने कहा अब घर जाइये । तब भोजाभाई ने कहा एक मित्र मेरा और है वह भी आप का दर्शन करना चाहता है । स्वामी की आज्ञा पाकर कारियाणी जाकर मांचा खाचर को साथ लाये । मांचा खाचर दर्शन करते ही धन्य-धन्य हो गये । उनके दर्शन के आनंद में मैं अपने तीन सौ विगहा कपास गायों को चरा दिया । जिससे सभी आत्मीय जनोने निन्दा किया । तब मैने कहा दिव्य पुस्षो के दर्शनार्थ जब मैं जाता हूँ तब यह खेती विघ्न बनती है, इसलिये गायों को चरा दिया । ऐसा समझा कर जेतपुर रामानंद स्वामी के पास चला गया । उनकी अद्‌भुत कथा वार्ता सुनकर उन्ही में भगवान जैसा भास होने लगा । उनकी सेवा करने लगा, एक दिन प्रसन्न होकर उन्होंने कहा अब आप घर जाइये । तब मैने कहा अन्नकूट के उत्सव पर मैं अवश्य आऊँगा । आज्ञा प्राप्त कर मांचा भगत घर वापस गये ।

रामानंद स्वामी की निष्ठावाले मांचा भगत, नाजा भगत एवं मोणबाई थीं । ए सभी रामानंद स्वामी का जब ध्यान करते तब श्रीजी महाराज दिखाई देते थे । मस्तक ऊपर सुन्दर केश शोभायमान होता दिखाई देता, सुन्दर तपस्वी वेश देदीप्यमान स्वस्म दिखाई देता था । उस समय यह होता कौन है । इस शंका का समाधान करने के लिये रामानंद स्वामी के पास गये, परंतु रामानंद स्वामी अन्तर्ध्यान हो गये ।

इसके बाद फरेणी में श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ गये तब उनसे कहा कि जब हम रामानंद स्वामी का ध्यान करते तब उस ध्यान में आपका दर्शन होता उसी स्वस्म का इस समय प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है ।

श्रीजी महाराज जब इस लोक में नहीं थे तब प्रत्येक भक्त रामानंद स्वामी को भगवान मानते थे । इसलिये महाराज मे भगवान के स्वस्म का ध्यान जल्दी होता नहीं था । यह तो भगवान द्वारा ही सम्भव है । दूसरे में ईश्वरत्व आना सम्भव है लेकिन ईश्वर होना सम्भव नहीं है ।

महाराज अपने ऊपर खूब दया किये हैं । सब कुछ तैयार मिला है । महाराज, महाराजश्री, संत, शास्त्र, मंदिर क्या नही मिला है, इसके अलावां और क्या चाहिए ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बडी गादीवाला एवं प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री के चरणों में साष्टांग दंडवत् के साथ नम्र प्रार्थना कि वे हम जैसे पामर पर प्रसन्न होकर महाराज को प्रार्थना करे कि हमारी श्री नरनारायणदेव महाप्रभु में उत्तरोत्तर निष्ठा बढती रहे ।

•

धर्मकुल की दयालुता

- पटेल हिरल पी. (एप्रोच-बापुनगर)

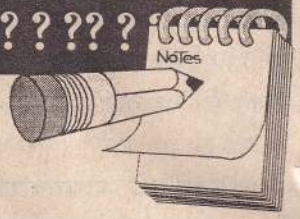
अपने संप्रदाय में धर्मकुल की दयालुता की बहुत बाते सुनी हुई है तथा अनुभव की है किंतु यह बात मैंने खुद अनुभव की है । एकबार एक हरिभक्त के यहाँ अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्रीकी पधरावनी थी । हम सब सुबह जल्दी उठकर उसी की तैयारी में लगे हुए थे । तभी फोन आया कि मेरी माताजी मंदिर जा रही थी और रास्ते में गीर गयी । उन्हे दिमाग पर खूब चोट लगी थी । इसलिए मै और मेरी एक सहेली सीधे अस्पताल गये । पू. गादीवालाश्री १०-०० बजे पधारने वाली थी और मुझे गादीवाला के दर्शन का निश्चय था । तब गादीवाला को पता चला मेरी माताजी को चोट लगी है तो उन्होने मुझे पास बुलाया और कहा जाओ कुछ नही होगा । नरनारायणदेव है न ! दूसरे दिन सी.टी. स्केन रीपोर्ट कराया तो डॉकटरने कहा की हेमरेज है । फिर वी.एस. में एडमिट करवाया जहाँ डॉक्टरने कहा नोर्मल है । आपरेशन की जस्रत नहीं है । ये सब कुछ अपने इष्टदेव नरनरायणदेव के आशीर्वाद तथा गुरु के आशीर्वाद से मुमकिन हुआ है । और आश्चर्य की बात यह थी कि वी.एस. होस्पीटल के जनरल वोर्ड में जहाँ मुझे जाने पर संकोच होता था वहाँ गादीवाला खुद आशीर्वाद देने पधारीं । हमारी खुशी का कोई ठिकाना ही न था । इतने बडे राजाधिराज होने के बावजूद, हमारे जैसे छोटे हरिभक्त के लिए इतना कुछ .....

इसलिये जिन्हे ये सर्वोपरि नरनारायणदेव तथा ऐसे गुरु मिले हों उन्हे अगर शूली भी लगे तोभी कांटा लगा ऐसा ही लगेगा ।

''धर्मकुल का आश्रित ही भगवानके धाम को प्राप्त करेगा ।''

•

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ महाभारत में अर्जुन ने मत्स्य बेध किया उसमें कौन सी नक्षत्र थी ?

प्रश्न : २ दशरथ पुत्र एवं हरिप्रसाद पुत्र का मुंडन संस्कार कहाँ हुआ था ?

प्रश्न : ३ शरीर का शरीर से सम्बन्धि जैसी गाढ प्रीति सत्संग में क्यों नहीं होती ?

प्रश्न : ४ जेतलपुर में महाराज लालदास के घर आम्रफल खाये एवं अत्यन्त प्रसन्न होकर लालदास पटेल को वरमांगने को कहा तो लालदासने कौन सा वर मांगा ?

प्रश्न : ५ कौन साधु हिंमत के साथ बात करता हो तो उसका भी त्याग करना चाहिए ?

प्रश्न : ६ शास्त्रमें भक्ति के दो प्रकार बताये हैं जिस में एक "परा दूसरी अपरा" तो इन दोनो भक्ति का मतलब क्या है ?

प्रश्न : ७ "संत विना साची कौण कहे, सारा सुखनी वात....."
इस कीर्तन की रचना किस नंद संत द्वारा की गयी है, जो सद्गुरु की पंक्ति में आते है ?

मई २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान, तपस्वी इन छ जनों का सम्मान करना चाहिए । (शि. ६९) (२) एक मास कथा वार्ता सुनना एवं भजन करना । (३) १. मुदिता, २. मैत्री, ३. करुणा, ४. उपेक्षा, (४) पू.स.गु. स्वामी कृष्णानंदजी । (५) स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी । (६) अध्याय-४, श्लोक-३७ "भगवद्गीता" (७) ऋतुकाल सोलह रात्रि का है जिस में दिन का निधेष है, प्रथम चार रात्रि का त्याग करना चाहिए । १. रजस्वला स्त्री चांण्डाल, २. दूसरे दिन ब्रह्महत्यागी, ३. तीसरे दिन धोबिन, ४. चौथे दिन स्नान करके शुद्ध होती है ।

१. कंचन बहन शैलेषभाई पटेल (मूलीदेश-रतनपर)
२. सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा (श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर)
३. विनोदभाई पूंजाभाई पटेल (वहेलाल)
४. अमृतलाल के. मोदी (सोजा)
५. गोरधनभाई शंकरलाल पटेल (सोजा)
६. धीरूभाई काछडिया (स्वामिनारायण मंदिर हर्षद)
७. भोलाभाई आत्माराम
८. हिरजीभाई गंगदास काछडिया (नवा वाडज)
९. हिंमतभाई, सोमाभाई, नानजीभाई, शंभुभाई, त्रिभोवनभाई (नवावाडज)
१०. गौरीबहन, उर्मिलाबहन, परधाबहन, सविताबहन, रेखाबहन, विजूबहन (नवावाडज)
११. नागजीभाई वल्लभभाई (चांदलोडीया)
१२. हसुबहन के. ठक्कर (इसनपुर)
१३. अरविंदाबहन भावसार (चांदलोडीया)
१४. माधवजीभाई आद्रोजा
१५. सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. "भक्तिसुधा" श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्ट हुई है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहने श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखकर भेंजे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिकमास दरम्यान कथा पारायण एवं नरनारायणदेव का पाटोत्सव

प्रत्येक तीन वर्षो में आनेवाला अधिक मास भक्तों के लिए भक्ति का उत्तम साधन है । इस वर्ष प्रथम ज्येष्ठ मास अधिक पुरुषोत्तम मास में आने से प्रत्येक तिथि के अनुसार उत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धूमधाम के साथ सम्पन्न करने के लिए पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजीकी प्रेरणा से एवं मार्गदर्शन में किया जा रहा है । जिस प्रसंग में सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर में ता. १५-५-०७ से १९-५-०७ तक श्रीमद् भागवत पंचाहन पारायण श्रीमती अ.नि. जसुमती बहन जयदेवभाई ब्रह्म भट्ट के स्मरणार्थ उनके सुपुत्र श्री भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट तथा श्री डॉ. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट (यु.एस.ए.) परिवार की तरफ से सम्पन्न किया गया था । जिसके वक्ता थे पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजी महंत स्वामी । संहितापाठ के वक्ता स्वा. भक्तिवल्लभदासजी थे । ता. १९-५-०७ के दिन भरत खंड के अधिष्ठाता सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का अभिषेक अधिक ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के दिन सम्पन्न हुआ ता । जिस में उसी दिन पारायण की पूर्णाहुति एवं नरनारायणदेव का पाटोत्सव, जिस में पाटोत्सव की यजमान प.पूज्या अ.सौ. बडी गादीवाला थी, इनके साथ दूसरे भी सह यजमान बने छे । (१) अ.नि. श्री रुगनाथभाई अमृतलाल (लोयावाला) के स्मरणार्थे श्री वसंतलाल रुगनाथभाई सोनी के पुत्र श्री रमेशभाई वसंतलाल सोनी एवं श्री महेशभाई वसंतलाल सोनी परिवार (गोपीनाथ ज्वेलर्स बापूनगर - रतनपोल) (२) श्री भीखाभाई जेठाभाई ब्रह्मभट्ट परिवार की तरफ से श्री भास्करभाई जे. ब्रह्मभट्ट एवं श्री डॉ. मनोजभाई जे. ब्रह्मभट्ट (अमेरिका) (३) श्री विजयभाई के. चावडा की तरफ से श्री हार्दिककुमार वी. चावडा

प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युजियम" निर्माण के विषय में

देश-विदेश में स्थापित श्रीहरि के आश्रितो को ज्ञात होगा ही की सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के अपर स्वरूप परम पूज्य निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य अलौकिक संकल्प अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति हमारे इष्टदेव सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर स्वेच्छा से रहे तब तक जिस-जिस वस्तु या पदार्थ का उपयोग स्पर्श किये वे स्थापित दो गादी परंपरा में और मूल संप्रदाय के आश्रित-मंदिरो में संग्रहित अथवा सुरक्षित है ऐसी अनेक अलौकिक वस्तुओं के रख रखाव हेतु दिव्य और समस्त विश्व में जो अद्वितीय एवं अद्‌भुत हम सभी का श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण कार्य शीघ्रता से चालू है । हरिभक्त को ऐसे अलौलिक महा भगीरथ कार्यमें सेवा करके प्रसादी की वस्तु अर्पण करने की इच्छा हो यह स्वाभाविक है । उन सभी को विशेष ज्ञान हेतु तथा सरलता रहे अपनी सेवा नगद, चेक, ड्राफ्ट से

"श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के नाम से भेजने का अनुरोध है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

परम पूज्य बडे महाराजश्री आचार्य पीठाधिपति पद से निवृत्त होने के बाद सुबह ९ से ११ बजे तक नियमित रूप से श्री स्वामिनारायण म्युझियम की बैठक में बिराजते हैं ।

संपर्क, मुलाकात, दर्शन उस समय में हो सकते है । वहाँ पर वर्तमान परम पूज्य आचार्य महाराजश्री भी सत्संग की अनेक प्रवृत्ति में समय निकालकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम में चलती प्रवृत्ति को देखने जाते हैं ।

"श्री स्वामिनारायण म्युझियम"

टर्फ स्कुल के सामने, नारणपुरा ए.ई.सी. झोनल ओपिस के पीछे, अहमदाबाद-१३, फोन नं. (०७९) २७४९९५९७

तथा श्री मौनिकभाई वी. चावडा के परिवार के साथ होमात्मक महापूजा में ता. १८-५-०७ के दिन दिव्य अलौकिक लाभ लिया था । इसके साथ ता. १९-५-०७ के दिन प्रात: काल ६-३०बजे सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव एवं धर्म भक्ति श्रीहरिकृष्ण महाराज एवं श्री राधाकृष्ण देव का षोडशोपचार महाभिषेक श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपोने वेदविधि के साथ सम्पन्न किया । जिसमें यजमान परिवार ने पूजन विधि में सुन्दर लाभ लिया था । पाटोत्सव के मंगलदिन श्री नरनारायणदेव को नानाविध वस्त्रालंकारो से अलंकृत करके छप्पन प्रकार का महानैवेद्य समर्पित किया गया था । प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पूज्य लालजी महाराजश्रीने आरती उतारी थी, जिसका दर्शन करके भक्तजन आनंद का अनुभव किये थे ।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव एवं पारायण के यजमानने प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती उतारकर हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त किये थे । बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महारजश्रीने कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । सभा संचालन करते हुए पूज्य महंत स्वमीने बताया की दिव्य मंगल पाटोत्व के यजमान प.पू.अ.सौ. बडी गादीवाला थी, जिससे आश्रितों को इसका दिव्य लाभ मिला था । इसके बाद प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाश्री द्वारा संशोधन एवं अनुवाद किये हुए स.गु. वासुदेवानंद वर्णीकृत श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ अंश ४ एवं ५ का विमोचन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया था । इस ग्रंथ का सम्पूर्ण खर्च संप्रदाय के मूर्धन्य विद्वान् एवं कथाकार शा.हरिकेशवदासजीके शिष्य मंडल की तरफ से दिया गया था । जिस ग्रन्थ का संस्कृत प्रूफ पंडितवर्य डॉ. श्रीवाचस्पति मिश्र (प्रधानाध्यापकश्री, श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यलय जेतलपुर वाडी) तथा गुजराती का अनुवाद श्री चन्द्रकांतभाई मोहनलाल पाठक साहबने खूब सेवा भाव से एवं निष्ठा से किये है । जिन्हें प.पू. बडे महाराजश्री हृदय से आशीर्वाद दिये थे । अन्य विद्वान संतोने प्रवचन किया था - जिसमें जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, कांकरिया के महंत स्वामी, धोलका के महंत स्वामी इत्यादि । अंत में समस्त सभा को प.पू. लालजी महाराजश्रीने दृष्टांत देकर हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित होकर दर्शनएवं महाप्रसाद का आनंद लिये थे ।

पारायण एवं पाटोत्सव के आयोजनमें कोठारी स्वामी एवं विश्ववल्लभदासजी स्वामी, आनंदप्रसाददासजी एवं पार्षद भूरा भगत और कोठार स्टापने बडी जहेमत उठायी थी ।

(कोठारी स्वामी सत्यप्रकाशदास)

अहमदाबाद के बोपल के मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री की आज्ञा से अपने बोपल मंदिर में पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ११-५-०७ से ता. १५-५-०७ तक श्रीमद् भक्तचिंतामणि ग्रंथ का रात्रि पारायण शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी गु.शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न किया गया था । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बोपल, आमली, घूमा के हरिभक्त कथा का लाभ लेने के लिए आते थे । महंत स्वामी हरिवल्लभदासजी, स्वा. सुव्रतस्वरूपदासजी तथा पा. महेन्द्र भगत एवं हरिभक्त मिलकर इस विस्तार में भव्य शोभायमान रथ तैयार करके श्रीहरिकी प्रतिमा के साथ शोभायात्रा का आयोजन किया था । जिसका लाभ हजारो भक्तलेकर कृत कृत्य हो गये थे ।

ता. १५-५-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक पूजन एवं अन्नकूट वेदविधि से सम्पन्न किया गया था । बाद में कथा की पूर्णाहुति करके आरती उतारे थे । इस समस्त उत्सव के प्रेरक श्री रतीभाई खीमजीभाई पटेल (कालुपुरमंदिर के ट्रस्टी) बोपल मंदिर के कोठारी श्री अमृतभाई पटेल, श्री प्रविणभाई भावसार, श्री गोविंदभाई बारसिया, श्री रसिकभाई एस. थे । इस पाटोत्सव के यजमान श्री रतीभाई खीमजीभाई के स्नेही मित्र परोक्ष के श्री खुशालभाई सोमाभाई पटेल घूमावाले अलौकिक लाभ लेकर जीवन को धन्य बनाये । सभी पर प्रसन्न होकर आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *(प्रवीणभाई उपाध्याय)*

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२३ में सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२३ में पवित्र पुरुषोत्तम मास धूमधाम से मनाया जा रहा है । प्रतिदिन सायंकाल एक घंटे तक मंत्र का जप चल रहा है । इसके साथ एकादशी के दिन ठाकुरजी का महाभिषेक महापूजन, महा आरती इत्यादिका सुन्दर आयोजन किया गया है । यहाँ की उत्साही सत्संगी महिलायें सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसन्नता के लिए अनोखी रीति से भक्त चिन्तामणी का १३१ पारायण अपने घरो में विना कीसी स्वार्थ के लगभग १०० महिलायें समूह में पारायण कर रही हैं । घर के काम की व्यवस्था करके समय निकाल कर भक्ति यात्रा में बडे उत्साह के साथ लाभ ले रही है । जिसे भजन ही करना है, उसे किसी प्रकार की परेशानी या चिंता नहीं है । भक्तियाग में से प्रेरणा मिलती है । पूज्य शा.स्वा. हरिकेशवदासजी द्वारा ऐसी प्रवृति अभिनंदन के पात्र है ।

(बाबूभाई जे. पटेल)

लुणावाडा में नूतन मंदिर की खात विधि

श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के पंचमहाल के लुणावाला शहर में श्रीहरि समकालीन स.गु. महानुभावानंद स्वामीने सत्संग करवाया एवं हरिमंदिर का निर्माण करवाया । यहाँ ब्राह्मणो का सत्संग श्री नरनारायणदेव में नियम, निश्चय, पक्ष वाला है । श्री नरनारायणदेव के मंदिर में प्रसादी का दरवाजा लुणावाडा मंदिर मं रखा हुआ है । यहाँ के श्री शिवशंकरभाई गोपालबाई दवे एवं श्री रमणलाल अम्बालाल भट्ट जैसे अनेक हरिभक्त संप्रदाय में साहित्य एवं व्यवस्थापन क्षेत्र में उत्तम सेवा किये हैं। पंचमहाल जिले का मुख्य स्थान होने से यहाँ खूब विकाश हुआ है । जिससे कोट विस्तार में भीड अधिक होती है । जिस कारण हरिभक्तो के निवास स्थान कोट से बाहर हो गये हैं । हरिभक्तो के परिवार में सत्संग का संस्कार बना रहे एवं छोटे-बडे सभी हरिभक्त चलकर मंदिर जा सके इस लिए छपैया धाम सोसायटी में १२५ बंगला की जमीन सभी सत्संगी अपने प्लोट में से श्री नरनारायणदेव को अर्पण किये । जिसका दस्तावेज श्री नरनारायणदेव देश गादी के नाम कर दिया गया । जिसमें नूतन भव्यमंदिर करने के लिए श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. २९-४-०७ के दिन प्रातः ९-००बजे शिलान्यास विधि धूम-धाम से सम्पन्न हुई । जिस में पुरुषो का मंदिर, स्त्रियों का मंदिर इस के साथ पार्टीप्लोट इत्यादि का निर्माण किया जायेगा । इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी संतमंडल के साथ आयोजन के लिए पधारे थे । तथा नारायण मुनि का मंडल इस प्रसंग पर उपस्थित था । झाडी देश के हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री झाड़ी देश पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे ।*(रसिकलाल बी. काछिया, घनश्यामभाई काछिया)*

धोलका मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री की आज्ञा से धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर में वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी ता. ७-५-०७ के दिन श्री मुरलीमनोहरदेव, श्रीहरिकृष्ण महाराज का. १८१ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथो से ठाकुरजी का षोडशोपचार विधि से संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर स.गु. महंत स्वा. जगतप्रकाशदासजी एवं महंत स्वामी विष्णुप्रसाददासजी की प्रेरणा से अ.नि. श्री गोविंदलाल प्रेमचन्दभाई सोनी अ.नि. श्रीमती चंपादेवी गोविंदलाल सोनी के स्मरणार्थ उनके परिवार के स्मरणार्थ उनके परिवार के श्री जसवंतलाल सोनी, श्री कांतिलाल सोनी, श्री हेमांगभाई, श्री भास्करभाई, श्री जयेशभाई आदेसरा ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन, अर्चन, आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । प्रासंगिक सभा में सभा संचालक शा. घनश्यामप्रकाशदासजी, महंत स्वामी एवं अन्य विद्वान संत ठाकुरजी एवं आचार्यश्री का माहात्म्य समझाया था । अंत में समस्त सभा को पूज्य लालजी महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । मूली से हरिस्वरूप स्वामी का मंडल सेवा के लिये पधारा था ।

(पा. भरत भगत, मूली)

अरोडा (ईडर देश)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ईडर मंदिर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददास की प्रेरणा से

ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिसके यजमान श्री जेठाभाई जेशंगभाई परिवारने महापूजा आदि में लाभ लिया था । ता. २१-४-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री गाँव मं पधारे उस समय संत हरिभक्तोने खूब आनंद-उत्साह के साथ स्वागतोत्सव किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारे थे । बाद में प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन, अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । ईडर मंदिर के महंत स्वामी हिंमतनगर के महंत स्वामी, सोकली गुरुकुल के संत प्रसंगोचित प्रवचन किये थे । अंत में पूज्य आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । *(पूजारी कपिल स्वामी)*

किंचोड (ईडर देश)

किंचोड श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३९ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं मदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से धूमधाम से सम्पन्न किया गया था ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. २२-४-०७ से ता. २६-४-०७ तक श्रीमद् भागवत का पंचाहन पारायण का आयोजन किया गया था । शा. स्वा. भक्तिवल्लभदासजीने सुमधुर शैली में कथा किया था ।

ता. २६-४-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । संत भक्तोंने उनका धूमधाम से स्वागत किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रथम ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती उतारकर, कथा की पूर्णाहुती करके सभा में आये थे । सभा में संत-भक्तों ने पुष्पहार द्वारा स्वागत संमान पूजन करके आरती उतारी थी । इस प्रसंग पर श्री विनोदभाई सी. पटेल के मार्गदर्शन में नरनारायणदेव युवक मंडल एवं गाँव के भावी युवकोने सुंदर सेवा की थी । ईडर मंदिर के कोठारीश्रीने पूज्य आचार्य महाराजश्री का पूजन, अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद, प्रांतीज, हिंमतनगर, सापावाड, मूली के संत-महंत पधारे हुए थे । अंत में पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । महंत स्वामीने सुंदर आयोजन किया था ।

(साधु जीवनदास - ईडर)

मेघाणीनगार में अविरत चलती बाल सभा

मेघाणीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पूज्य बडे महाराजश्री एवं पूज्य लालजी महाराजश्री की कृपा से करीब ११ वर्षो से प्रति रविवार की सुबह में १०-११ बजे तक बाल सभा चलती है । बालकों के संस्कार के साथ अभ्यास में उपयोगी पेन, नोटबुक, पुस्तक इत्यादि उत्साह बढाने के लिए दिया जाता है । जिसका संचालन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल करता है ।

(रणछोड़भाई पटेल)

पवित्र अधिक मास में माणसा मंदिर में पाटोत्वस सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से अधिक मास में मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव एवं श्रीहरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अधिक ज्येष्ठ मास शुक्ल-६के दिन षोडशोपचार विधि के साथ सम्पन्न किया गया था । माणसा एवं अगल-बगल गाँव के हरिभक्त दर्शन क रके धन्यता का अनुभव किये थे । महंत स्वामी के शिष्य पूर्णप्रकाश स्वामी अधिक मास में नित्य कथा करते है । धर्मवंश की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

(शा. भक्तिकेशवदास)

मेमनगर - भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा पूज्य गादीवालाश्री की आज्ञा से सां.यो. कमलाबा की प्रेरणा से मेमनगर - भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग प्रवृत्ति श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाहन पारायण ता. १-५-०७ से ५-५-०७ तक सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । भक्तिमंडल की बहनो के मार्गदर्शन से ता. १-५-०७ के दिन प.पू. गादीवाला की उपस्थिति में उन्हीं के हाथों से दीपक जलाकर पारायण प्रारम्भ किया गया था । ता. ५-५-०७ के दिन पूज्य गादीवालाश्री पधारकर अपने वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति की थी । इस प्रसंग पर धाम-धाम से सांख्ययोगी बहने पधारे थी । अपने अमृतमय वाक्यो से सभी को सन्तुष्ट की थी । सत्संगी बहने दर्शन का अमूल्य लाभ ली थी ।

(रेखाबहन तथा वर्षा बहन सोनी)

माणसा महिला मंदिर में अखंड धूनि

बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक पुरुषोत्तम मास के निमित्त

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं अ.सौ. पूज्य गादीवालाश्रीकी आज्ञा से माणसा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से स्थानिक हरिभक्तों के सहयोग से बहनोंने अधिक ज्येष्ठ शुक्ल-११ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की २४ घन्टे की अखंडधुनि की थी। जिस में बडी संख्या में लोग उपस्थित थे। *(प.भ. ईश्वरभाई पटेल)*

हिंमतनगर

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सा.यो. कमलाबा की प्रेरणा से हिंमतनगर गाँव में विशेष जागृति के लिए ता. २१-३-०७ से ता. २५-३-०७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह पारायण सां.यो. कोकिलाबा के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ। ता. २५-३-०७ के दिन पूज्या गादीवाला पधारी थी। ता. २५-३-०७ के दिन अपने हाथों से कथा की पूर्णाहुति की थी। इस प्रसंग में अलग-अलग धामों से सां.यो. बहने पधारी थी। कथा की यजमान मंजुलाबहन पी. पटेल थी, पूज्या गादीवाला का आशीर्वाद उन्हे प्राप्त हुआ। *(उषाबहन पटेल)*

विहार मंदिर में प्रथम पाटोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा पूज्या गादीवालाकी आज्ञा से विहार गाँव की बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। विहार मंदिर की सांख्ययोगी बाइयो एवं सत्संगी बहनो के मार्गदर्शन में ता. २९-४-०७ से ता. १-५-०७ तक भक्तिनिधि शास्त्र का पारायण सां.यो. कोकिलाबा के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। धाम-धाम से सां.यो. बहने पधारी थी।

प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर ता. १-५-०७ के दिन महापूजा-अभिषेक-अन्नकूट इत्यादि का दर्शन सभी को मिला था। तारा बहन की सेवा सराहनीय थी। *(नर्मदा बहन)*

कोठ गाँव में सत्संग सभा

श्रीजी महाराज के चरणों से अंकित जहाँ पर भगवान स्वामिनारायण तीन-तीन बार पधारे थे ऐसे कोठ गाँव में गणेश धोलका के सन्निकट के इतिहास को कैसे भूला जा सकता है। - जब श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये थे। उसके बाद सबकुछ भूल जाने के लिए रायण वृक्ष के नीचे विश्राम किये थे। गणेश धोलका के नजदीक कोठ गाँव में ता. १-५-०७ के दिन दो दिन के लिए श्रीजी महाराज सत्संग सभा का आयोजन प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री अरविंद तथा सत्संगी हरिभक्तों द्वारा किया गया था। सत्संग सभा में सुप्रसिद्ध कथाकार स.गु. पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने वचनामृत के रहस्यो की, उपासना की, निष्ठा की निश्चय, पक्ष की खूब उपदेशात्मक कथा की थी। इस प्रसंग पर धोलका मंदिर के महंत पूर्णप्रकाशदासजी महंतश्री मुनि स्वामी तथा जेतलपुर मंदिर के महंत आत्मप्रकाशदासजी, श्यामचरण स्वामी आदि संत उपस्थित थे।

(शा. भक्तिनंदनदास)

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

घनश्यामनगर में (ता. हलवद)

श्री हनुमानजी महाराज की रजत जयंती महोत्सव हलवद तहसील के घनश्याम नगर गाँव में श्री हनुमानजी महाराज का रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ७-५-०७ से ९-५-०७ तक तीन दिन के लिए शिबिर का आयोजन किया गया था। जिस में नरनारायणदेव गादी के एवं मूली श्री राधाकृष्णदेव का वफादार होकर रहने की सभी वक्ताओं ने सूचन किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं बजरंगदल के कार्य कर्ता खड़े पग सेवा किये थे।

ता. ९-५-०७ के दिन प.पू.ध.धु.

नारायणघाट मंदिर में अधिक पुरुषोत्तम मास में रात्रि पारायण सम्पन्न

श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित अलौकिक तीर्थ भूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री एवं प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से अधिक पुरुषोत्तम मास में ता. १७-५-०७ से ता. २५-५-०७ तक रात्रि में ८-३० से ११-०० तक श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण शा. स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था। जिस में नारायणघाट, शाहीबाग, वाडज, राणीप, साबरमती, मेघाणीनगर के करीब २००० हजार श्रोतागण उपस्थित होकर लाभ लिये थे। संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने किया। *(शा.स्वा. हरिकृष्णदास)*

आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उन्हीं के हाथों से श्री हनुमानजी महाराज का रजत जयंती महोत्सव आरती अन्नकूट आदि धूमधाम से सम्पन्न किया गया था । प्रासंगिक सभा में बालको ने सुन्दर प्रवचन किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । श्रीजी स्वस्मदास इस प्रसंग के आयोजक थे । सभा संचालन भक्तिविहारीदासने किया ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर
वेगडवाव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बहनो के नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १२-५-०७ से ता. १४-५-०७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन का त्रिदिनात्मक कथा पारायण एवं विष्णुयाग का आयोजन किया गया था । ता. १४-५-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई । प्रसंग के प्रेरक श्रीजी स्वस्म स्वामी थे ।

(तारबुंदिया रमेश)

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रत्येक उत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से धूमधाम के साथ मनाया गया । चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन श्री हनुमान जयंती का उत्सव का आयोजन किया गया था । इस के साथ प.पू. बडे महाराजश्री के प्राकट्योत्सव को भी मनाया गया था । इस प्रसंग पर बोर्ड ओफ एज्युकेशन एडीसन न्युजर्सी से श्रीमती वीणा आयर दर्शन करने आयी थी । उनके मंदिर की तरफ से सन्मान किया गया था । सभा में श्री हनुमानजी का पूजन, अर्चन करके भेंट सभी ने अर्पण की । संतोने धर्मकुल की महिमा समझायी थी । प.पू. बड़े महाराजश्री ने सम्पूर्ण विश्व में सर्वोपरि मूल संप्रदाय का प्रचार रात दिन विना विराम के किये थे ।

कभी अपने निवास स्थान पर नहीं बैठे । वर्तमान में भी श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रवृत्ति में सतत लगे रहते हैं । हरिभक्तों को सेवा के लिए अनुरोध किया गया था । अपनी सेवा संस्था द्वारा वुडब्रीज टाउनशीप हेल्थ डिपार्टमेन्ट द्वारा नेशलन बोन मेरो ड्राईव आनंद पटेल के लाईफ के लिए आयोजित किया गया था । जिस में सभी भक्तों को पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आज्ञा की थी । सेवा करनेवाले सभी भक्तों का संमान महंत स्वामीने किया था । श्री कमलेशभाई की माताजी के स्वास्थ्य हेतु श्रीहरि के नाम स्मरम की धुनि की गयी थी । यहाँ ज्ञान स्वामी कथावार्ता का सुन्दर आनन्द देते हैं । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुंदर चलती है । *(प्रवीणभाई शाह)*

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

मुली श्री स्वामिनारायण मंदिर : के पू. बन्दनीय श्री राधाकृष्णदेव एवं पूज्य आचार्यश्री के अत्यंत कृपापात्र अ.नि. स.गु. पुराणी स्वामी देवचरणदासजी (स्वामिनारायण संहिता ग्रंथ कर्ता) के एक मात्र शिष्य साधु हरिजीवनदासजी ता. १८-५-०७ के दिन श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद (राणीप) : श्री कनैयालाल अंबालाल पंचाल (उनावावाळा) ता. २८-४-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : श्रीमती ताराबहन अंबालाल मेहता श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

मणीपुरा (विरमगाँव) : श्री हर्षदभाई हरिभाई रावल ता. १९-४-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : श्रीनिरंजनाबहन अश्विनभाई शाह ता. २८-४-०७ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

गांधीनगर : श्री जेशंगभाई मोतीभाई चौधरी ता. २९-४-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

माधवगढ (प्रांतीज) : श्री कीरीटकुमार तथा जयेसभाई की माताजी श्रीमती कांताबहन जसुभाई वैशाख शुक्ल-११ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

भाउपुरा (ता. कलोल : श्री कोठारी परसोत्तमभाई कालीदास पटेल ता. ७-४-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।



रवापर(कच्छ) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर कथामृत पान कराते हुए पू.पी.पी. स्वामी एवं कथा श्रवण करते हुए श्रोतागण ।



झूलासण गाँव में पारायण प्रसंग पर धनश्याम स्वामी के ऊपर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



मथुरा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर होमात्मक महापूजा में यजमानश्री राजेशकुमार हरिकृष्णभाई चतुर्वेदी एवं दिनेशभाई ।



लुणावाडा नूतन मंदिर का भूमि पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आरती उतारते हुए हरिभक्त ।

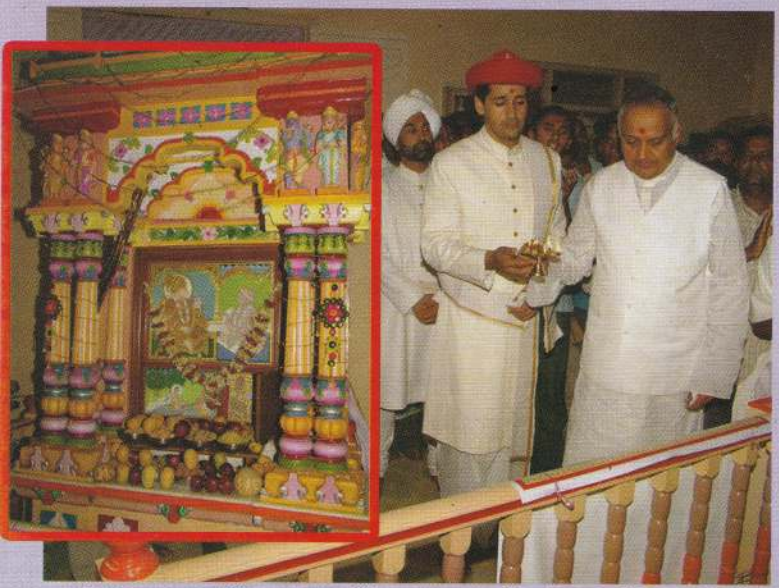


कोलनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर ज्ञान स्वामी प.पू. बडे महाराजश्री का प्राकट्योत्सव केक काटकर सम्पन्न करते हुए ।



प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रचारा अमेरिका धर्मप्रवास के लिए पधारे उस समय वहाँ के हरिभक्त श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रवृत्ति में सहभागी हुए थे

Registered under RNI - No - applied Followed by words " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



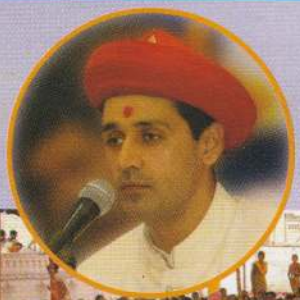
मूलीश्री राधाकृष्णदेव संस्थान के स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के मूल जन्म स्थल भादरा में दोनो प.पू. महाराजश्री के संकल्प-प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मंदिर का पुनः भव्य निर्माण होते ही प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न हुई ।



भादरा श्री स्वामिनारायण मंदिर के यज्ञ विधि में श्रीफलका हवन करते हुए श्रीहरि के छठे एवं सातवे धर्मवंशज ।



भादरा की प्रासंगिक सभा में मुख्य यजमानश्री लक्ष्मणभाई राघवाणी (कच्छ) श्रीहरि के छठे एवं सातवें वंश का पूजन-अर्चन करते आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।









भादरा में हरिभक्तों की विशाल सभा में श्रीहरि के दोनो अपर स्वस्म जीवका कल्याण एवं मोक्ष हो ऐसा ही आशीर्वाद दिये थे ।

Praful Kharsani